हरियाणा विधान सभा

की

कार्यवाही

11 जून, 2001

खण्ड-2, अंक 1

अधिकृत विवरण

विषय सूची

सोमवार, 11 जून, 2001

	पृष्ठ संख्या
शोक प्रस्ताव	(1) 1
बैठक का स्थगन	(1) 32

मूल्य : 41

हरियाणा विधान सभा

सोमवर, 11 जून, 2001

विधान सभा की बैठक, हरियाणा विधान सभा हाल, विधान भवन सैक्टर-1, चण्डीगढ़ में प्रातः 11.00 बजे हुई। अध्यक्ष (श्री सतबीर सिंह कादयान) ने अध्यक्षता की।

शोक प्रस्ताव

Mr. Speaker : Now the Chief Minister will make Obituary references.

चौधरी देवी लाल, भूतपूर्व उप प्रधान मंत्री

मुख्य मन्त्री (श्री ओम प्रकाश चौटाला) : अध्यक्ष महोदय एवं सदन के सभी सम्मानित सदस्यगण, यह सदन किसानों, गरीबों एवं दलितों के मसीहा भूतपूर्व उप प्रधान मंत्री चौधरी देवी लाल के 6 अप्रैल, 2001 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है।

चौधरी देवी लाल जी का जन्म 25 सितम्बर, 1914 को एक किसान परिवार में हुआ। महात्मा गांधी जी के आह्वान पर चौधरी देवी लाल जी 15 वर्ष की अल्पायु में ही आज़ादी के आन्दोलन में कूद पड़े। वह वर्ष 1930 में हिसार में गिरफ्तार हुए तथा उन्हें बाद में बोर्सटल जेल, लाहौर भेज दिया गया। इससे वह विचलित हुए बिना निर्भीकता से राष्ट्र के स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लेते रहे। उन्होंने अपनी पढ़ाई छोड़ दी और 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' में सक्रिय भूमिका निभाई और पुनः वर्ष 1932 में गिरफ्तार किये गये। चौधरी देवी लाल 'भारत छोड़ो आन्दोलन'-के दौरान 1942 में गिरफ्तार हुए और सैण्ट्रल जेल, मुल्तान भेज दिये गये। मुजारों और भूमिहीन किसानों के सच्चे हितैषी चौधरी देवी लाल जी ने वर्ष 1946 से 1948 तक मुजारा आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। अपने परिवार की जमीन पर मुजारों को मालिकाना हक दिलवा कर उन्होंने एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया।

वह 1952, 1959 और 1962 में संयुक्त पंजाब विधान सभा के सदस्य चुने गये। वह 1956-57 के दौरान मुख्य संसदीय सचिव रहे। वह 1962-1963 में विपक्ष के नेता रहे। वह 1974, 1977, 1982, 1985 और 1987 में हरियाणा विधान सभा के लिए चुने गये। उन्होंने 21 जून, 1977 से 27 जून, 1979 तक और पुनः 20 जून, 1987 से 2 दिसम्बर, 1989 तक हरियाणा के मुख्य मंत्री का पद सुशोभित किया। वह 1980 तथा 1989 में लोक सभा के लिए निर्वाचित हुए। उन्होंने 1989 से 1991 के दौरान भारत के उप प्रधान मंत्री तथा केन्द्रीय कृषि एवं पर्यटन मंत्री के रूप में राष्ट्र की सेवा की। वह निधन के समय राज्य सभा के सदस्य थे।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के ग्रामीण लोगों के उत्थान के दर्शन में उनका गहरा विश्वास था। वह निर्भीक और संघर्षशील नेता थे और प्रजातांत्रिक मूल्यों में उनकी गहरी निष्ठा थी। वह ईमानदारी, सादगी और मानवता की प्रतिमूर्ति थे। चौधरी देवी लाल जी का राजनैतिक दर्शन उच्च आदर्शों व सिद्धान्तों पर आधारित था और उन्होंने जीवनपर्यन्त अन्याय के विरुद्ध संघर्ष किया।

[श्री ओम प्रकाश चौटाला]

संयुक्त पंजाब की सरकार द्वारा हरियाणा के वर्तमान क्षेत्र से हो रहे सौतेले व्यवहार के कारण उन्होंने हरियाणा को एक अलग राज्य बनाने की मांग उठाई। दमन और अन्याय को वे अभिशाप मानते थे और इनके विरुद्ध आवाज उठाने के लिए उन्होंने लोगों में हमेशा राजनैतिक चेतना पैदा की। वह आपातकाल के दौरान 19 महीने जेल में रहे। उनका मानना था कि 'लोकराज लोकलाज से चलता है'। उन्होंने इस सिद्धान्त का अपने सात दशक के राजनैतिक जीवन में अक्षरशः पालन किया।

हरियाणा के मुख्य मंत्री के रूप में उन्होंने राज्य के तीव्र विकास और जन कल्याण की अनेक स्कीमें लागू की थीं। इनमें से कई स्कीमों का तो बाद में राष्ट्रीय स्तर पर भी अनुसरण हुआ। उन्होंने वृद्धावस्था पैंशन और विकास कार्यों के लिए मैचिंग ग्राण्ट स्कीमें शुरू करके हरियाणा के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ा। लोगों की समस्याओं का मौके पर ही समाधान करने के लिए उन्होंने 'खुला दरबार' आयोजित करने की परम्परा शुरू की। उन्होंने 6 एकड़ तक की भूमि जोतों पर भू-राजस्व खत्म किया था और ट्रैक्टरों का रोड टैक्स व साईकिलों पर से टोकन टैक्स माफ किया। उन्होंने लघु व कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए ग्रामीण उद्योग योजना शुरू करवाई। उन्होंने किसानों और श्रमिकों द्वारा लिए गये ऋणों पर ब्याज दर कम करवाई। उन्होंने किसानों, श्रमिकों और छोटे दुकानदारों के ऋण माफ करके एक नया इतिहास रचा था। उन्होंने घुमन्तू कबीलों के स्कूल जाने वाले प्रत्येक बच्चे को प्रतिदिन एक रुपया 'उपस्थिति प्रोत्साहन' के रूप में देने की एक अनूठी स्कीम इसलिए शुरू की थी ताकि गरीब वर्ग के बच्चे स्कूलों में जाना शुरू कर दें और अच्छी तालीम हासिल कर सकें। उन्होंने प्राकृतिक आपदाओं से किसानों की फसल तबाह होने पर उन्हें मुआवजा देने की स्कीम शुरू की।

वह सरकार के काम-काज में पारदर्शिता बनाए रखने व सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी के प्रबल पक्षधर थे। वह कभी सत्ता लोलुप नहीं रहे। उन्होंने आम आदमी की जरूरतों को पूरा करने के लिए निःस्वार्थ भाव से संघर्ष किया। 1989 में लोक सभा के आम चुनावों के बाद उन्हें नेशनल फ्रण्ट संसदीय दल का सर्वसम्मति से नेता चुना गया। लेकिन उन्होंने श्री वी0 पी0 सिंह के समर्थन में प्रधान मंत्री का पद त्याग दिया।

चौधरी देवी लाल के निधन से एक युग का अन्त हो गया है। उनका जीवन प्रजातंत्र, धर्मनिरपेक्षता तथा दलितों के हितों की रक्षा के लिए एक लम्बा निःस्वार्थ संघर्ष था। गांव की चौपाल से जुड़े चौधरी देवी लाल सत्ता के शिखर पर रहते हुए भी आम आदमी को नहीं भूले। उनके जीवन का मूल मंत्र था कि सत्ता सुख भोगने के लिए नहीं बल्कि जन सेवा के लिए होती है।

उनके निधन से राष्ट्र एक वयोवृद्ध स्वतन्त्रता सेनानी, एक महान दृष्टा, एक यशस्वी धरती पुत्र, सच्चे राष्ट्र भक्त, संत राजनीतिज्ञ और किसानों के सच्चे हितैषी की सेवाओं से वंचित हो गया है। चौधरी देवी लाल जी के देहावसान से निःस्वार्थ संघर्ष और त्याग के गांधीवादी युग के साथ वर्तमान की एक जीवन्त कड़ी टूट गई है।

यह सदन शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

श्री जगन्नाथ कौशल, भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री

यह सदन श्री जगन्नाथ कौशल, भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री के 31 मई, 2001 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है।

उनका जन्म 23 अप्रैल, 1915 को हुआ। वह विधि स्नातक थे और 1965 तथा 1967 में पंजाब तथा 1969 से 1976 तक हरियाणा के एडवोकेट जनरल रहे। वह 1970 से 1976 और पुनः 1984 में पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ की सीनेट एवं सिंडीकेट के सदस्य रहे। वह 1952 से 1954 तक राज्य सभा और 1960 से 1984 तक लोक सभा के सदस्य रहे। वह 1976 से 1979 तक बिहार के राज्यपाल तथा 1982 से 1984 तक केन्द्रीय विधि मन्त्री रहे। उन्होंने सोवियत संघ, मंगोलिया, फिन्लैण्ड और अमेरिका में हुए सम्मेलनों में कई भारतीय शिष्टमण्डलों का नेतृत्व किया।

उनकी राजनीति में विशेष रुचि थी इसलिए एक मर्तबा हाईकोर्ट के जज चुने जाने पर भी हाईकोर्ट के जज का पद ग्रहण नहीं किया और राजनीति में सक्रिय रूप से जीवनपर्यन्त वह राजनैतिक तौर पर लोगों की सेवा करते रहे।

उनके निधन से देश एक अनुभवी सांसद, योग्य प्रशासक तथा प्रख्यात न्यायविद की सेवाओं से वंचित हो गया है। यह सदन दिवंगत के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

सरदार सुरजन सिंह, एक स्वतन्त्रता सेनानी

यह सदन सरदार सुरजन सिंह, स्वतन्त्रता सेनानी के 1 जून, 2001 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है।

87 वर्षीय सरदार सुरजन सिंह व्यवसाय से कृषक थे। वह 1940 में आज़ाद हिन्द फौज में भर्ती हुए। उन्हें 1972, 1985 और 1997 में 'ताम्रपत्र' से सम्मानित किया गया। उन्हें 1992 में पलवल में आयोजित 'भारत छोड़ो आन्दोलन' जयन्ती वर्ष में सेवा मैडल प्रदान किया गया।

उनके निधन से देश एक स्वतन्त्रता सेनानी व सच्चे देशभक्त की सेवाओं से वंचित हो गया है। यह सदन दिवंगत के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

सरदार सरूप सिंह, एक स्वतन्त्रता सेनानी

यह सदन सरदार सरूप सिंह, स्वतन्त्रता सेनानी के 19 अप्रैल, 2001 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है।

उनका जन्म वर्ष 1919 में हुआ। वह आजाद हिन्द फौज में भर्ती हुए। वह पांच वर्ष तक जापान की जेल में बन्द रहे। उन्हें कई बार 'ताम्रपत्र' से सम्मानित किया गया। उनकी सामाजिक तथा धार्मिक कार्यों में गहरी रुचि थी।

उनके निधन से देश एक स्वतन्त्रता सेनानी व सच्चे देशभक्त की सेवाओं से वंचित हो गया है। यह सदन दिवंगत के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

[श्री ओम प्रकाश चौटाला]

श्री रतन सिंह, एक स्वतन्त्रता सेनानी

यह सदन श्री रतन सिंह, स्वतन्त्रता सेनानी के 15 मई, 2001 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है।

उनका जन्म 3 अगस्त, 1919 को हुआ। वह 1937 में जाट रैजीमैंट में भर्ती हुए और बाद में आजाद हिन्द फौज में शामिल हो गये। वह लगभग सात वर्ष बर्मा, सिंगापुर और अण्डेमान निकोबार की जेल में बन्द रहे। वह एक अच्छे खिलाड़ी और समाज सेवक थे। उन्हें कई बार राज्य सरकार द्वारा सम्मानित किया गया।

उनके निधन से देश एक स्वतन्त्रता सेनानी व सच्चे देशभक्त की सेवाओं से वंचित हो गया है। यह सदन दिवंगत के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

श्री बक्तावर सिंह, एक स्वतन्त्रता सेनानी

यह सदन श्री बक्तावर सिंह, स्वतन्त्रता सेनानी के 22 अप्रैल, 2001 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है।

उनका जन्म 1911 में हुआ। वह आजाद हिन्द फौज में भर्ती हुए तथा बर्मा और सिंगापुर की जेल में बन्द रहे।

उनके निधन से देश एक स्वतन्त्रता सेनानी व सच्चे देशभक्त की सेवाओं से वंचित हो गया है। यह सदन दिवंगत के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

हरियाणा के शहीद

यह सदन उन वीर सैनिकों को अपना अश्रुपूर्ण नमन करता है जिन्होंने अपनी मातृभूमि की एकता और अखण्डता की रक्षा के लिए अदम्य साहस और वीरता से लड़ते हुए अपने जीवन का बलिदान दिया।

इन महान शहीदों के नाम इस प्रकार हैं:-

1. कार्यवाहक कमांडैन्ट राजेन्द्र सिंह, गांव खरकड़ा, रोहतक
2. नायब सूबेदार नसरुदीन, गांव डिगनपुर, गुड़गांव
3. सिपाही भूप सिंह, गांव नैन, महेन्द्रगढ़
4. सवार अशोक कुमार, गांव रानीला, भिवानी
5. ग्रिनेडियर राकेश कुमार, गांव सुमरी, अम्बाला

6. नायब सूबेदार हनुमान सिंह, गांव गोठड़ा, रिवाड़ी
7. ब्रिगेडियर अजमेर सिंह, गांव जोरासी खास, पानीपत
8. लांस नायक जसबीर सिंह, गांव कोड़वा खुर्द, अम्बाला
9. सिपाही वीरेन्द्र सिंह, गांव धीन, अम्बाला
10. सिपाही जलकरण, गांव लाडयान, झज्जर
11. सिपाही आनन्द सिंह, गांव गढ़ी सिसाना, सोनीपत
12. सिपाही यशपाल, गांव खेड़ी कलां, फरीदाबाद

इनके अलावा अन्य भी देश की सीमाओं के सजग प्रहरी अगर हमें इस संसार से छोड़ कर चले गये हैं तो यह सदन इन महान वीरों की शहादत पर इन्हें शत-शत नमन करता है और इनके शोक-संतप्त परिवारों के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

यह सदन

हरियाणा विधान सभा के अध्यक्ष श्री सतबीर सिंह कादियान की माता,

श्रीमति फूलवती देवी ;

हरियाणा के वित्तमन्त्री श्री सम्पत सिंह के भान्जे,

श्री सतपाल ;

हरियाणा विधान सभा के सदस्य श्री बलवन्त सिंह मायना की माता,

श्रीमती माड़ी देवी ;

हरियाणा विधान सभा के सदस्य श्री जे0 पी0 शर्मा की बहन,

श्रीमती कौशल्या देवी ;

हरियाणा विधान सभा के सदस्य श्री सूरज मल अंतिल की पत्नी,

श्रीमती जयवन्ती देवी ;

हरियाणा विधान सभा के सदस्य श्री कंवरपाल सिंह के पिता,

श्री चन्दन सिंह तथा

हरियाणा विधान सभा के सदस्य श्री पूर्ण सिंह डाबड़ा की चाची; **श्रीमती विद्या देवी** के दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है।

अध्यक्ष महोदय, मुझे सूचना मिली है कि कलायत के पूर्व विधायक श्री भगत राम जी का भी निधन हो गया है उस दिवंगत आत्मा को भी मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। अध्यक्ष महोदय, इसके साथ ही नेपाल में राज परिवार का इतना बड़ा नर संहार किया गया है उसके प्रति

[श्री ओम प्रकाश चौटाला]

भी मैं आपके द्वारा अपनी भावनाएं व्यक्त करते हुए दुःख प्रकट करता हूं तथा शोक-संतप्त परिवारों के प्रति अपनी संवेदना प्रकट करता हूं । अध्यक्ष महोदय, मैं सदन के सभी सम्मानित सदस्यों से विनम्र निवेदन करूंगा कि शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी संवेदना प्रकट करें और दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हुए उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करें।

चौधरी भजन लाल (आदमपुर) : माननीय अध्यक्ष महोदय, एवं माननीय सदन के सभी सदस्यगण, मैं अपनी तरफ से व अपनी पार्टी की तरफ से किसानों, गरीबों एवं दलितों के मसीहा भूतपूर्व उप-प्रधान मंत्री चौधरी देवी लाल जी के 6 अप्रैल, 2001 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता हूं।

चौधरी देवी लाल जी का जन्म 25 सितम्बर, 1914 को एक किसान परिवार में हुआ। महात्मा गांधी जी के आह्वान पर चौधरी देवी लाल 15 वर्ष की अल्पायु में ही आज़ादी के आंदोलन में कूद पड़े। वह वर्ष 1930 में हिसार में गिरफ्तार हुए तथा उन्हें बाद में बोसर्टल जेल, लाहौर में भेज दिया गया। इससे वह विचलित हुए बिना निर्भीकता से राष्ट्र के स्वतन्त्रता आंदोलन में सक्रिय भाग लेते रहे। उन्होंने अपनी पढ़ाई छोड़ दी और 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' में सक्रिय भूमिका निभाई और पुनः वर्ष 1932 में गिरफ्तार किये गए । चौधरी देवी लाल 'भारत छोड़ो आंदोलन' के दौरान 1942 में गिरफ्तार हुए और सैन्ट्रल जेल, मुलतान भेज दिए गए। मुजारों और भूमिहीन किसानों के सच्चे हितैषी चौधरी देवी लाल ने वर्ष 1946 से 1948 तक मुजारा आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। अपने परिवार की जमीन पर मुजारों को मालिकाना हक दिलवा कर उन्होंने एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया।

वह 1952, 1959 और 1962 में संयुक्त पंजाब विधान सभा के सदस्य चुने गए। वह 1956-57 के दौरान मुख्य संसदीय सचिव रहे। वह 1962-1963 में विपक्ष के नेता रहे। वह 1974, 1977, 1982, 1985 और 1987 में हरियाणा विधान सभा के लिए चुने गए। उन्होंने 21 जून, 1977 से 27 जून, 1979 तक और पुनः 20 जून, 1987 से 2 दिसम्बर, 1989 तक हरियाणा के मुख्य मंत्री का पद सुशोभित किया। वह 1980 तथा 1989 में लोक सभा के लिए निर्वाचित हुए। उन्होंने 1989 से 1991 के दौरान भारत के उप प्रधान मंत्री तथा केन्द्रीय कृषि एवं पर्यटन मंत्री के रूप में राष्ट्र की सेवा की। वह निधन के समय राज्य सभा के सदस्य थे।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के ग्रामीण लोगों के उत्थान के दर्शन में उनका गहरा विश्वास था। वह निर्भीक और संघर्षशील नेता थे और प्रजातांत्रिक मूल्यों में उनकी गहरी निष्ठा थी। वह ईमानदारी, सादगी और मानवता की प्रतिमूर्ति थे। चौधरी देवी लाल का राजनैतिक दर्शन उच्च आदर्शों व सिद्धांतों पर आधारित था और उन्होंने जीवनपर्यन्त अन्याय के विरुद्ध संघर्ष किया। संयुक्त पंजाब की सरकार द्वारा वर्तमान क्षेत्र से हो रहे सौतेले व्यवहार के कारण उन्होंने हरियाणा को एक अलग राज्य बनाने की मांग उठाई। दमन और अन्याय को वे अभिशाप मानते थे और इनके विरूद्ध आवाज उठाने के लिए उन्होंने लोगों में हमेशा राजनैतिक चेतना पैदा की। वह आपातकाल के दौरान 19 महीने जेल में रहे। उनका मानना था कि 'लोकराज लोकलाज' से चलता है'। उन्होंने इस सिद्धांत का अपने सात दशक के राजनैतिक जीवन में अक्षरशः पालन किया।

हरियाणा के मुख्य मंत्री के रूप में उन्होंने राज्य के तीव्र विकास और जन कल्याण की अनेक स्कीमें लागू की थीं। उनमें से कई स्कीमों का तो बाद में राष्ट्रीय स्तर पर भी अनुसरण हुआ। उन्होंने वृद्धावस्था पैंशन और विकास कार्यों के लिए मैचिंग ग्रांट स्कीमें शुरु करके हरियाणा के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ा। लोगों की समस्याओं का मौके पर ही समाधान करने के लिए उन्होंने 'खुला दरबार' आयोजित करने की परम्परा शुरु की। उन्होंने 6 एकड़ तक की भूमिजोतों पर भी भू-राजस्व खत्म किया था और ट्रैक्टरों का रोड टैक्स व साईकिलों पर से टोकन टैक्स माफ किया। उन्होंने लघु व कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए ग्रामीण उद्योग योजना शुरु करवाई। उन्होंने किसानों और श्रमिकों और छोटे दुकानदारों द्वारा लिए गए ऋण माफ करके एक नया इतिहास रचा था। उन्होंने घुमन्तू कबीलों के स्कूल जाने वाले प्रत्येक बच्चे को प्रतिदिन एक रुपया 'उपस्थिति प्रोत्साहन' के रूप में देने की एक अनूठी स्कीम शुरू की थी।

वह सरकार के काम-काज में पारदर्शिता बनाए रखने व सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी के प्रबल पक्षधर थे। वह कभी सत्तालोलुप नहीं रहे। उन्होंने आम आदमी की जरुरतों को पूरा करने के लिए निःस्वार्थ भाव से संघर्ष किया। 1989 में लोक सभा के आम चुनावों के बाद उन्हें नेशनल फ्रंट संसदीय दल का सर्वसम्मति से नेता चुना गया। लेकिन उन्होंने श्री वी0 पी0 सिंह के समर्थन में प्रधान मंत्री का पद त्याग दिया।

चौधरी देवी लाल के निधन से एक युग का अन्त हो गया है। उनका जीवन प्रजातंत्र, धर्मनिरपेक्षता तथा दलितों के हितों की रक्षा के लिए एक लम्बा निःस्वार्थ संघर्ष था। गांव की चौपाल से जुड़े चौधरी देवी लाल सत्ता के शिखर पर रहते हुए भी आम आदमी को नहीं भूले। उनके जीवन का मूल मंत्र था कि सत्ता सुख भोगने के लिए नहीं बल्कि जन सेवा के लिए होती है।

उनके निधन से राष्ट्र एक वयोवृद्ध स्वतन्त्रता सेनानी, एक महान दृष्टा, एक यशस्वी धरती पुत्र, सच्चे राष्ट्रभक्त, संत राजनीतिज्ञ और किसानों के सच्चे हितैषी की सेवाओं से वंचित हो गया है। चौधरी देवी लाल के देहावसान से निःस्वार्थ संघर्ष और त्याग के गांधीवादी युग के साथ वर्तमान की एक जीवन्त कड़ी टूट गई है।

मैं अपनी तरफ से और अपनी पार्टी की तरफ से शोक-संतप्त परिवार के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी तरफ से व अपनी पार्टी की तरफ से श्री जगन्नाथ कौशल, भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री के 31 मई, 2001 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता हूं।

उनका जन्म 23 अप्रैल, 1915 को हुआ। वह विधि स्नातक थे और 1965 तथा 1967 में पंजाब तथा 1969 से 1976 तक हरियाणा के एडवोकेट जनरल रहे। वह 1970 से 1976 और पुनः 1984 में पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ की सीनेट एवं सिंडीकेट के सदस्य रहे। वह 1952 से 1964 तक राज्यसभा और 1980 से 1984 तक लोक सभा के सदस्य रहे। वह 1976 से 1979 तक बिहार के राज्यपाल तथा 1982 से 1984 तक केन्द्रीय विधि मंत्री रहे। उन्होंने सोवियत संघ, मंगोलिया, फिनलैण्ड और अमेरिका में हुए सम्मेलनों में कई भारतीय शिष्टमंडलों का नेतृत्व किया।

उनके निधन से देश एक अनुभवी सांसद, योग्य प्रशासक तथा प्रख्यात न्यायविद की सेवाओं से वंचित हो गया है। यह सदन दिवंगत के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

[श्री भजन लाल]

अध्यक्ष महोदय, इसी प्रकार से मैं अपनी तरफ से व अपनी पार्टी की तरफ से सरदार सुरजन सिंह, स्वतंत्रता सेनानी के एक जून, 2001 को हुए दु:खद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता हूं।

87 वर्षीय सरदार सुरजन सिंह व्यवसाय से कृषक थे। वह 1940 में आजाद हिन्द फौज में भर्ती हुए। उन्हें 1972, 1985 और 1997 में 'ताम्रपत्र' से सम्मानित किया गया। उन्हें 1992 में पलवल में आयोजित 'भारत छोड़ो आन्दोलन' जयन्ती वर्ष में सेवा मैडल प्रदान किया गया। उनके निधन से देश एक स्वतंत्रता सेनानी व सच्चे देशभक्त की सेवाओं से वंचित हो गया है। मैं अपनी तरफ से व अपनी पार्टी की तरफ से दिवंगत के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, इसी प्रकार मैं अपनी तरफ से व अपनी पार्टी की तरफ से सरदार सरूप सिंह, स्वतंत्रता सेनानी के 19 अप्रैल, 2001 को हुए दु:खद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता हूं। उनका जन्म वर्ष 1919 में हुआ। वह आजाद हिन्द फौज में भर्ती हुए। वह पांच वर्ष तक जापान की जेल में बंद रहे। उन्हें कई बार 'ताम्रपत्र' से सम्मानित किया गया। उनकी सामाजिक तथा धार्मिक कार्यों में गहरी रूचि थी।

उनके निधन से देश एक स्वतंत्रता सेनानी व सच्चे देशभक्त की सेवाओं से वंचित हो गया है। मैं अपनी तरफ से व अपनी पार्टी की तरफ से दिवंगत के शोक संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी तरफ से व अपनी पार्टी की तरफ से श्री रतन सिंह, स्वतंत्रता सेनानी के 15 मई, 2001 को हुए दु:खद निधन पर भी गहरा शोक प्रकट करता हूं।

उनका जन्म 3 अगस्त, 1919 को हुआ। वह 1937 में जाट रैजीमैंट में भर्ती हुए और बाद में आजाद हिन्द फौज में शामिल हो गये। वह लगभग सात वर्ष बर्मा, सिंगापुर और अण्डेमान निकोबार की जेल में बंद रहे। वह एक अच्छे खिलाड़ी और समाज सेवक थे। उन्हें कई बार राज्य सरकार द्वारा सम्मानित किया गया।

उनके निधन से देश एक स्वतंत्रता सेनानी व सच्चे देशभक्त की सेवाओं से वंचित हो गया है। मैं अपनी तरफ से व अपनी पार्टी की तरफ से दिवंगत के शोक संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, इसी तरह से मैं अपनी तरफ से व अपनी पार्टी की तरफ से श्री बख्तावर सिंह, स्वतंत्रता सेनानी के 22 अप्रैल, 2001 को हुए दु:खद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता हूं। उनका जन्म 1911 में हुआ। वह आजाद हिन्द फौज में भर्ती हुए तथा बर्मा और सिंगापुर की जेल में बंद रहे।

उनके निधन से देश एक स्वतंत्रता सेनानी व सच्चे देशभक्त की सेवाओं से वंचित हो गया है। मैं अपनी तरफ से व अपनी पार्टी की तरफ से दिवंगत के शोक संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी तरफ से व अपनी पार्टी की तरफ से उन वीर सैनिकों को अपना अश्रुपूर्ण नमन करता हूं जिन्होंने अपनी मातृभूमि की एकता और अखंडता की रक्षा के लिए अदम्य साहस और वीरता से लड़ते हुए अपने जीवन का बलिदान दिया। इन महान शहीदों के नाम इस प्रकार हैं : कार्यवाहक कमांडैंट राजेन्द्र सिंह, गांव खरकड़ा, रोहतक, नायब सूबेदार नसरुद्दीन, गांव हिंगनपुर, गुड़गांव, सिपाही भूप सिंह, गांव नैन, महेन्द्रगढ़, सवार अशोक कुमार, गांव रानीला, भिवानी, ग्रेनेडियर राकेश कुमार, गांव सुभरी, अम्बाला, नायब सूबेदार हनुमान सिंह, गांव गोठड़ा रिवाड़ी, ग्रेनेडियर अजमेर सिंह, गांव जौरासी खास, पानीपत, लांस नायक जसबीर सिंह गांव कोड़वा खुर्द अम्बाला, सिपाही वीरेन्द्र सिंह गांव धीन, अम्बाला, सिपाही जसकरण सिंह झज्जर, सिपाही आनन्द सिंह गांव गढ़ी सिसाना, सोनीपत, सिपाही यशपाल गांव खेड़ी कलां, फरीदाबाद और इसमें एक नाम और रह गया वह मुझे अनीता यादव ने बताया सुखबीर सिंह पुत्र श्री मांगे राम गांव मूंडसा का है। इसका नाम भी इन शोक प्रस्तावों में शामिल कर लिया जाए।

श्री अध्यक्ष : ठीक है, यह नाम भी शामिल किया जाता है।

श्री भजन लाल : यह सदन इन महान वीरों की शहादत पर इन्हें शत-शत नमन करता है और इनके शोक संतप्त परिवारों के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है। यह सदन हरियाणा विधान सभा के अध्यक्ष श्री सतबीर सिंह कादयान की माता श्रीमती फूलवती देवी, हरियाणा के वित्त मंत्री प्रो0 सम्पत सिंह के मांजे श्री सतपाल, हरियाणा विधान सभा के सदस्य श्री बलवन्त सिंह मायना की माता श्रीमती माड़ी देवी, हरियाणा विधान सभा के सदस्य श्री जे0 पी0 शर्मा की बहन श्रीमती कौशल्या देवी, हरियाणा विधान सभा के सदस्य श्री सूरजमल अंतिल की पत्नी श्रीमती जयवंती देवी, हरियाणा विधान सभा के सदस्य श्री कंवर पाल सिंह के पिता श्री चंदन सिंह तथा हरियाणा विधान सभा के सदस्य श्री पूर्ण सिंह डाबड़ा की चाची श्रीमती विद्या देवी के दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है। इसी के साथ नेपाल के बारे में जो मुख्य मंत्री जी ने कहा है और इनके अलावा भी जो शहीद हुए हैं उनके नाम आपके नोटिस में आए, उनको इस प्रस्ताव में शामिल कर लिया जाए। नेपाल के बारे में तो मैं केवल इतना ही कहना चाहता हूं कि वहां बहुत बड़ी ट्रेजडी हुई है। इसे हम घोर अन्याय कह सकते हैं। ऐसा इतिहास में कम ही देखने को मिलेगा कि इतना नौजवान बेटा अपने पूरे परिवार को खत्म कर दे। नेपाल और हिन्दुस्तान का बड़ा डी अटूट रिश्ता रहा है। चायना बौर्डर के साथ लगते हुए भी उन्होंने हमेशा हिन्दुस्तान का साथ दिया है इसके लिए हम उनका जितना धन्यवाद करें उतना थोड़ा है। इस शोक की घड़ी में मैं भी उनके प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं।

श्री कृष्ण पाल गुर्जर (मेवला महाराजपुर) : अध्यक्ष महोदय, किसानों, गरीबों एवं दलितों के मसीहा भूतपूर्व उप-प्रधानमंत्री चौधरी देवी लाल के 6 अप्रैल, 2001 को हुए दुःखद निधन पर मैं अपनी तरफ से व अपनी पार्टी के सदस्यों की तरफ से गहरा शोक प्रकट करता हूं।

चौधरी देवी लाल जी का जन्म 25 सितम्बर, 1914 को एक किसान परिवार में हुआ। महात्मा गांधी जी के आह्वान पर चौधरी देवी लाल 15 वर्ष की अल्पायु में ही आजादी के आंदोलन में कूद पड़े। वह वर्ष 1930 में हिसार में गिरफ्तार हुए तथा उन्हें बाद में बोसर्टल जेल, लाहौर भेज दिया गया। इससे विचलित हुए बिना निर्भीकता से राष्ट्र के स्वतन्त्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई और पुनः वर्ष 1932 में गिरफ्तार किए गए। चौधरी देवी लाल सैन्ट्रल जेल, मुलतान भेज

[श्री कृष्ण पाल गुर्जर]

दिये गये। मुजारों और भूमिहीन एवं किसानों के सच्चे हितैषी चौधरी देवी लाल ने वर्ष 1946 से 1948 तक मुजारा आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। अपने परिवार की जमीन पर मुजारों को मालिकाना हक दिलवा कर उन्होंने एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया।

वह 1952, 1959 और 1962 में संयुक्त पंजाब विधान सभा के सदस्य चुने गए। वह 1956-57 के दौरान मुख्य संसदीय सचिव रहे। वह 1962-63 में विपक्ष के नेता रहे। वह 1974, 1977, 1982, 1985 और 1987 में हरियाणा विधान सभा के लिए चुने गए। उन्होंने 21 जून, 1977 से 27 जून, 1979 तक पुनः 20 जून, 1987 से 2 दिसम्बर, 1989 तक हरियाणा के मुख्य मन्त्री का पद सुशोभित किया। वह 1980 तथा 1989 में लोक सभा के लिए निर्वाचित हुए। उन्होंने 1989 से 1991 के दौरान भारत के उप प्रधान मंत्री तथा केन्द्रीय कृषि एवं पर्यटन मंत्री के रूप में राष्ट्र की सेवा की। वह निधन के समय राज्य सभा के सदस्य थे।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के ग्रामीण लोगों के उत्थान के दर्शन में उनका गहरा विश्वास था। वह निर्भीक और संघर्षशील नेता थे और प्रजातांत्रिक मूल्यों में उनकी गहरी निष्ठा थी। वह ईमानदारी, सादगी और मानवता की प्रतिमूर्ति थे। चौधरी देवी लाल का राजनैतिक दर्शन उच्च आदर्शों व सिद्धान्तों पर आधारित था और उन्होंने जीवन पर्यन्त अन्याय के विरुद्ध संघर्ष किया संयुक्त पंजाब की सरकार द्वारा हरियाणा के वर्तमान क्षेत्र से हो रहे सौतेले व्यवहार के कारण उन्होंने हरियाणा को एक अलग राज्य बनाने की मांग उठाई। दमन और अन्याय को वे अभिशाप मानते थे और इनके विरुद्ध आवाज उठाने के लिए उन्होंने लोगों में हमेशा राजनैतिक चेतना पैदा की। वह आपातकाल के दौरान 19 महीने जेल में रहे। उनका मानना था कि 'लोकराज लोकलाज से चलता है'। उन्होंने इस सिद्धांत का अपने सात दशक के राजनैतिक जीवन में अक्षरशः पालन किया।

हरियाणा के मुख्य मंत्री के रूप में उन्होंने राज्य के तीव्र विकास और जन कल्याण की अनेक स्कीमें लागू की थीं। इनमें से कई स्कीमों का तो बाद में राष्ट्रीय स्तर पर भी अनुसरण हुआ। उन्होंने वृद्धावस्था पैंशन और विकास कार्यों के लिए मैचिंग ग्रांट स्कीमें शुरू करके हरियाणा के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ा। लोगों की समस्याओं का मौके पर ही समाधान करने के लिए उन्होंने 'खुला दरबार' आयोजित करने की परंपरा शुरू की। उन्होंने 6 एकड़ तक की भूमि जोतों पर भू-राजस्व खत्म किया था और ट्रैक्टरों का रोड टैक्स व साइकिलों पर से टोकन टैक्स माफ किया। उन्होंने लघु व कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए ग्रामीण उद्योग योजना शुरू करवाई। उन्होंने किसानों और श्रमिकों द्वारा लिये गये ऋणों पर ब्याज दर कम करवाई। उन्होंने किसानों, श्रमिकों और छोटे दुकानदारों के ऋण माफ करके एक नया इतिहास रचा था। उन्होंने घुमंतू कबीलों के स्कूल जाने वाले प्रत्येक बच्चों को प्रतिदिन एक नया रुपया 'उपस्थिति प्रोत्साहन' के रूप में देने की एक अनूठी स्कीम शुरू की थी। उन्होंने प्राकृतिक आपदाओं से किसानों की फसल तबाह होने पर उन्हें मुआवज़ा देने की स्कीम शुरू की।

वह सरकार के काम-काज में पारदर्शिता बनाये रखने व सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी के प्रबल पक्षधर थे। वह कभी सत्ता लोलुप नहीं रहे। उन्होंने आम आदमी की जरुरतों को पूरा करने के लिए निःस्वार्थ भाव से संघर्ष किया। 1989 में लोक सभा के आम चुनावों के बाद उन्हें

नेशनल फ्रण्ट संसदीय दल का सर्वसम्मति से नेता चुना गया। लेकिन उन्होंने श्री वी0 पी0 सिंह के समर्थन में प्रधान मंत्री का पद त्याग दिया।

चौधरी देवी लाल के निधन से एक युग का अन्त हो गया है। उनका जीवन प्रजातंत्र, धर्मनिरपेक्षता तथा दलितों के हितों की रक्षा के लिए एक लम्बा निःस्वार्थ संघर्ष था। गांव की चौपाल से जुड़े चौधरी देवीलाल सत्ता के शिखर पर रहते हुए भी आम आदमी को नहीं भूले। उनके जीवन का मूल मंत्र था कि सत्ता सुख भोगने के लिए नहीं बल्कि जन सेवा के लिए होती है।

उनके निधन से राष्ट्र एक वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी, एक महान दृष्टा, एक यशस्वी धरती पुत्र, सच्चे राष्ट्र भक्त, संत राजनीतिज्ञ और किसानों के सच्चे हितैषी की सेवाओं से वंचित हो गया है। चौधरी देवी लाल के देहावसान से निःस्वार्थ संघर्ष और त्याग के गांधीवादी युग के साथ वर्तमान की एक जीवन्त कड़ी टूट गई है।

अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी तरफ से और अपनी पार्टी की तरफ से शोक संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी तरफ से व अपनी पार्टी की तरफ से श्री जगन्नाथ कौशल, भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री के 31 मई, 2001 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता हूं।

उनका जन्म 23 अप्रैल, 1915 को हुआ। वह विधि स्नातक थे और 1965 तथा 1967 में पंजाब तथा 1969 से 1976 तक हरियाणा के एडवोकेट जनरल रहे। वह 1970 से 1976 तक और पुनः 1984 में पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ की सीनेट एवं सिंडीकेट के सदस्य रहे। वह 1952 से 1964 तक राज्य सभा और 1980 से 1984 तक लोक सभा के सदस्य रहे। वह 1976 से 1979 तक बिहार के राज्यपाल तथा 1982 से 1984 तक केन्द्रीय विधि मंत्री रहे। उन्होंने सोवियत संघ, मंगोलिया, फिन्लैण्ड और अमेरिका में हुए सम्मेलनों में कई भारतीय शिष्टमंडलों का नेतृत्व किया।

उनके निधन से देश एक अनुभवी सांसद, योग्य प्रशासक तथा प्रख्यात न्यायविद् की सेवाओं से वंचित हो गया है। मैं अपनी तरफ से व अपनी पार्टी की तरफ से दिवंगत के शोक संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, इसी प्रकार से मैं अपनी तरफ से व अपनी पार्टी की तरफ से सरदार सुरजन सिंह स्वतंत्रता सेनानी के एक जून, 2001 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता हूं।

87 वर्षीय सरदार सुरजन सिंह व्यवसाय से कृषक थे। वह 1940 में आजाद हिन्द फौज में भर्ती हुए। उन्हें 1972, 1985 और 1997 में 'ताम्रपत्र' से सम्मानित किया गया। उन्हें 1992 में पलवल में आयोजित 'भारत छोड़ो आंदोलन' जयन्ती वर्ष में सेवा मैडल प्रदान किया गया।

उनके निधन से देश एक स्वतंत्रता सेनानी व सच्चे देशभक्त की सेवाओं से वंचित हो गया है। मैं अपनी तरफ से व अपनी पार्टी की तरफ से दिवंगत के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, इसी प्रकार से मैं अपनी तरफ से व अपनी पार्टी की तरफ से सरदार सरूप सिंह स्वतंत्रता सेनानी के 19 अप्रैल, 2001 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक

[श्री कृष्ण पाल गुर्जर]

प्रकट करता हूं। उनका जन्म वर्ष 1919 में हुआ। वह आजाद हिन्द फौज में भर्ती हुए। वह पांच वर्ष तक जापान की जेल में बंद रहे। उन्हें कई बार 'ताम्रपत्र' से सम्मानित किया गया। उनकी सामाजिक तथा धार्मिक कार्यों में गहरी रुचि थी।

उनके निधन से देश एक स्वतंत्रता सेनानी व सच्चे देशभक्त की सेवाओं से वंचित हो गया है।

मैं अपनी तरफ से व अपनी पार्टी की तरफ से दिवंगत के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी तरफ से व अपनी पार्टी की तरफ से श्री रतन सिंह, स्वतंत्रता सेनानी के 15 मई, 2001 को हुए दु:खद निधन पर भी गहरा शोक प्रकट करता हूं।

उनका जन्म तीन अगस्त, 1919 को हुआ। वह 1937 में जाट रैजीमैंट में भर्ती हुए और बाद में आजाद हिन्द फौज में शामिल हो गये। वह लगभग सात वर्ष बर्मा, सिंगापुर और अण्डेमान निकोबार की जेल में बंद रहे। वह एक अच्छे खिलाड़ी और समाज सेवक थे। उन्हें कई बार राज्य सरकार द्वारा सम्मानित किया गया।

उनके निधन से देश एक स्वतंत्रता सेनानी व सच्चे देशभक्त की सेवाओं से वंचित हो गया है।

मैं अपनी तरफ से व अपनी पार्टी की तरफ से दिवंगत के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, इसी तरह से मैं अपनी तरफ से व अपनी पार्टी की तरफ से श्री बक्तावर सिंह, स्वतंत्रता सेनानी के 22 अप्रैल, 2001 को हुए दु:खद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता हूं। उनका जन्म 1911 में हुआ। वह आजाद हिन्द फौज में भर्ती हुए तथा बर्मा और सिंगापुर की जेल में बंद रहे उनके निधन से देश एक स्वतंत्रता सेनानी व सच्चे देशभक्त की सेवाओं से वंचित हो गया है। मैं अपनी तरफ से व अपनी पार्टी की तरफ से दिवंगत के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं।

मैं अपनी तरफ से तथा अपनी पार्टी की तरफ से उन वीर सैनिकों को अपना अश्रुपूर्ण नमन करता हूं जिन्होंने अपनी मातृभूमि की एकता और अखण्डता की रक्षा के लिए अदम्य साहस और वीरता से लड़ते हुए अपने जीवन का बलिदान दिया। इन महान शहीदों के नाम इस प्रकार हैं-कार्यवाहक कमांडैंट राजेन्द्र सिंह गांव खरकड़ा रोहतक; नायब सूबेदार नसरूदीन, गांव हिंगनपुर गुड़गांव, सिपाही भूप सिंह, गांव नैन, महेन्द्रगढ; सवार अशोक कुमार, गांव रानीला, भिवानी; ग्रेनेडियर राकेश कुमार, गांव सुमरी, अम्बाला; नायब सूबेदार हनुमान सिंह, गांव गोठड़ा, रिवाड़ी; ग्रेनेडियर अजमेर सिंह, गांव जोरासी खास, पानीपत; लांसनायक जसबीर सिंह, गांव कोड़वा खुर्द, अम्बाला; सिपाही वीरेन्द्र सिंह, गांव धीन अम्बाला; सिपाही जलकरण, गांव लाडथान्, झज्जर; सिपाही आनन्द सिंह, गांव गढ़ी सिसाना, सोनीपत; सिपाही यशपाल, गांव खेड़ी कला, फरीदाबाद; सिपाही सुखबीर सिंह, गांव मंडसा । इसके अलावा जितने भी सैनिक देश सेवा करते हुए शहीद हुए हैं, मैं इन महान वीरों की शहादत पर इन्हें शत-शत नमन करता हूं तथा उन के शोक संतप्त परिवारों के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, मैं हरियाणा विधान सभा के अध्यक्ष श्री सतबीर सिंह कादियान की माता श्रीमती फूलवती देवी, हरियाणा के वित्त मंत्री श्री सम्पत सिंह के भांजे श्री सतपाल, हरियाणा विधान सभा के सदस्य श्री बलवन्त सिंह मायना की माता श्रीमती माड़ी देवी, हरियाणा विधान सभा के सदस्य श्री जे0 पी0 शर्मा की बहन श्रीमती कौशल्या देवी, हरियाणा विधान सभा के सदस्य श्री सूरजमल अंतिल की पत्नी श्रीमती जयवन्ती देवी, हरियाणा विधान सभा के सदस्य श्री कंदरपाल सिंह के पिता श्री चन्दन सिंह, हरियाणा विधान सभा के सदस्य श्री पूर्ण सिंह डाबड़ा की चाची श्रीमती विद्या देवी, तथा कलायत के भूतपूर्व विधायक श्री भगतराम के दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता हूं तथा मेपाल राज परिवार में हुए दुःखद कांड में दिवंगतों के शोक संतप्त परिवारों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं।

श्री उपाध्यक्ष : अध्यक्ष महोदय, मैं किसानों, गरीबों एवं दलितों के मसीहा भूतपूर्व उप प्रधानमंत्री चौधरी देवी लाल के 6 अप्रैल, 2001 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता हूं। चौधरी देवी लाल जी का जन्म 25 सितम्बर, 1914 को तेजाखेड़ा फार्म पर एक गांव में हुआ था। चौधरी देवी लाल जी वास्तव में संघर्ष की सच्ची मूर्ति थे। चौधरी साहब ने उस उम्र से संघर्ष करना शुरू किया जब एक आम बच्चा संघर्ष की बात सोच ही नहीं सकता, बिना सहारे के वह जीवनयापन ही नहीं कर सकता। 1930 से ही चौधरी साहब ने अंग्रेजों की जेलों में जाना शुरू किया। कोई भी ऐसा आन्दोलन नहीं रहा जिसमें चौधरी देवी लाल जी की भागीदारी न रही हो। वे अंग्रेजों के खिलाफ लगातार लोहा लेते रहे। देश आजाद होने के बाद जितने भी संघर्ष हरियाणा के निर्माण के लिए हुए उनमें चाहे वे विधायक के रूप में थे उन्होंने लगातार हर संघर्ष में भाग लिया। संयुक्त पंजाब में जब हमारी अनदेखी होती रही तब भी उन्होंने लगातार आवाज उठाई। वास्तव में हरियाणा के निर्माण में चौधरी साहब की अहम भूमिका रही। हरियाणा के निर्माण के बाद उन्होंने देश को ऐसी चीजें दीं, ऐसी नीतियां बनाई जिन पर आज हरियाणा ही नहीं अपितु राष्ट्र के दूसरे प्रदेश भी अनुसरण कर रहे हैं। हर एक आदमी उनकी दरियादिली और उनकी नीतियों का कायल है। मुझे चौधरी देवी लाल जी के साथ उम्र के इस आखिरी पड़ाव में रहने का मौका मिला। चौधरी साहब की अपनी एक सोच थी। उन्होंने हरियाणा के किसानों को ही नहीं अपितु देश के किसानों को, गरीबों को राष्ट्रपति भवन का रास्ता दिखाया। चौधरी साहब एक ऐसी हस्ती थे, जिन्होंने उप प्रधानमंत्री होते हुए हरियाणा के पीढ़े और मुड्डे को दिल्ली तक पहुंचाया। इसका सही मायनों में श्रेय चौधरी देवी लाल जी को ही जाता है। इतना ही नहीं चौधरी देवी लाल जी ने एक गांव के आम किसान और गरीब आदमी के लिए हमारे देश की राजधानी दिल्ली में रुकने के लिए और खाने के लिए उचित प्रबन्ध करवाया था। दिल्ली में अब तो कई दूसरे होटल खुल गये हैं लेकिन पहले एक अशोका होटल था जो उस समय सबसे बड़ा होटल था। उसमें चौधरी साहब ने हरियाणा के मुड्डे डलवाये और बाहर से जो आम आदमी जाता था उसके लिए वहां पर 20/- रुपये में खाने का प्रबन्ध करवाया, इस तरह उन्होंने नई परम्परा चलाई। दिल्ली की राजनीति को गांव की देहलीज तक और चण्डीगढ़ की राजनीति को गांव की चौपाल तक पहुंचाने का श्रेय भी चौधरी देवी लाल जी को ही जाता है। चौधरी देवी लाल जी जीवन भर संघर्ष करते रहे और नई नई नीतियां बनाई और बहुत ही ज्यादा विकास के कार्य किए। चौधरी देवी लाल जी का लगाव वैसे तो पूरे हरियाणा प्रदेश से था लेकिन मेरा हल्का गुड़गांव तथा सोहना से उनका विशेष लगाव था। दीवाली और होली जैसे पवित्र त्यौहारों पर भी वे शहर में न रहकर मेरे हल्के

[श्री उपाध्यक्ष]

के गांवों में आते थे। इस बार होली के दिन दिल्ली में चौधरी साहब रुके हुए थे। वे दिल्ली से चलकर गुड़गांव आ गये और उसके बाद तिगरा व अलीपुर गांवों में गये। इन गांवों से भी चौधरी साहब का विशेष लगाव था। अलीपुर गांव में चौधरी साहब को जब गांव का सरपंच नंदा दिखाई नहीं दिया तो उन्होंने कहा कि नंदा सरपंच कहां है। गांव वालों ने बताया कि नंदा सरपंच का आप्रेशन हुआ है इतना सुनते ही चौधरी साहब नंदा सरपंच के घर गये और वहां पर आधे घंटे रुके। मेरे कहने का मतलब यह है कि चौधरी साहब एक गांव से जुड़ी हुई हस्ती थे। यही कारण है कि वे गरीबों और पिछड़े वर्गों को ऊपर उठाने में विशेष ध्यान देते थे। चौधरी साहब ने जो कुछ हरियाणा के लिए और हमारे उत्थान के लिए किया है उसे हम कभी भी नहीं भुला सकते। उनके निधन से हमें एक स्वतंत्रता सेनानी, गरीबों, मजदूरों और किसानों के मसीहा धरतीपुत्र तथा एक कर्मठ राजनेता की कमी रहेगी। इसके अतिरिक्त चौधरी साहब में एक विशेषता यह भी थी कि वे बेबाक वक्ता थे। सही बात चाहे किसी को बुरी लगे वे जरूर कहते थे, चाहे वे उनका वर्कर ही हो। एक बार की बात है मैं उनके साथ था। उस समय चौधरी साहब विपक्ष में थे और वे कहीं बाहर गये हुए थे। वहां पर बहुत ज्यादा भीड़ थी और पुलिस अधिकारी चौधरी साहब का जानने वाला था। उसने भीड़ से गलत व्यवहार किया तो चौधरी साहब ने उसे उसी समय कह दिया कि चाहे जनता हो या कोई अधिकारी सभी के सामने अनुशासन से पेश आना चाहिये। चौधरी साहब कहते थे कि जिस आंदोलन में अनुशासन न हो वह आंदोलन ज्यादा दिन तक नहीं चल सकता। चौधरी साहब के निधन होने से मैं तो यह कहूंगा कि हमने एक महान संत खो दिया है और मैं चाहूंगा कि पूरा सदन उनके शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करे। चौधरी साहब के जाने से हमारे सदन को भी काफी नुक्सान हुआ और उनके निधन से हमारा राष्ट्र एक स्वतंत्रता सेनानी, एक महान दृष्टा, एक सच्चे राष्ट्र भक्त, संत रातनीतिज्ञ और किसानों के सच्चे हितैषी की सेवाओं से वंचित हो गया है।

स्पीकर सर, इसके अतिरिक्त मैं श्री जगन्नाथ कौशल, भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री के 31 मई, 2001 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता हूं। उनका जन्म 23 अप्रैल, 1915 को हुआ था। जगन्नाथ जी हमारी राजधानी चण्डीगढ़ से एम0 पी0 रहे हैं। इसके अतिरिक्त वे विधि स्नातक थे और हरियाणा के एडवोकेट जनरल, पंजाब विश्वविद्यालय की सीनेट एवं सिंडीकेट के सदस्य और बिहार के राज्यपाल भी रहे। उन्होंने देश में और विदेश में अपनी सभी जिम्मेवारी सफलता पूर्वक निभाई। एक बार हाईकोर्ट में मुझे उनकी डिबेट सुनने का अवसर मिला, उस समय वे अन-आफिशियल डिबेट पर दहेज प्रथा के मुद्दे पर बहस कर रहे थे तो जज साहब ने उन्हें कहा कि जब आप केन्द्र में देश के कानून मंत्री थे उस समय ऐसा क्यों नहीं किया। जज साहब की यह टिप्पणी सुनने पर भी वे नाराज नहीं हुए उन्होंने उनकी बात मानी कि आप सही कह रहे हैं।

उनकी टिप्पणी पर वे नाराज नहीं हुए बल्कि बेबाक माना कि हमारे से कमी रही। वे इस तरह की बेबाक विधि के न्यायविद् विधि मंत्री रहे। उनके निधन से भी देश एक अनुभवी सांसद, योग्य प्रशासक तथा प्रख्यात न्यायविद् की सेवाओं से वंचित हो गया है। मैं अपनी तरफ से दिवंगत के शोक संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं।

मैं सरदार सुरजन सिंह, स्वतंत्रता सेनानी के 1 जून, 2001 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता हूं। सरदार सुरजन सिंह व्यवसाय से कृषक थे। वे आजाद हिन्द फौज

के लड़ाके थे। इस देश की आजादी में आजाद हिन्द फौज में उनका बहुत बड़ा रोल रहा। उन्हें ताम्रपत्र व अन्य कई पदकों से सम्मानित किया गया। उनके निधन से देश एक स्वतंत्रता सेनानी व सच्चे देश भक्त की सेवाओं से वंचित हो गया है। मैं अपनी तरफ से दिवंगत के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं।

मैं सरदार सरूप सिंह, स्वतंत्रता सेनानी के 19 जून, 2001 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता हूं। उनका जन्म वर्ष 1919 में हुआ। वह आजाद हिन्द फौज में भर्ती हुए। वह पांच वर्ष तक जापान की जेल में बन्द रहे। उन्हें कई बार 'ताम्रपत्र' से सम्मानित किया गया। उनकी सामाजिक तथा धार्मिक कार्यों में गहरी रुचि थी। उनके निधन से देश एक स्वतंत्रता सेनानी व सच्चे देश भक्त की सेवाओं से वंचित हो गया है। मैं अपनी तरफ से दिवंगत के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं।

मैं श्री रतन सिंह, स्वतंत्रता सेनानी के 15 मई, 2001 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता हूं। उनका जन्म 3 अगस्त, 1919 को हुआ। वह 1937 में जाट रैजीमैंट में भर्ती हुए और बाद में आजाद हिन्द फौज में शामिल हो गए। वह लगभग सात वर्ष बर्मा, सिंगापुर और अण्डेमान निकोबार की जेल में बन्द रहे। वह एक अच्छे खिलाड़ी और समाज सेवक थे। उन्हें कई बार राज्य सरकार द्वारा सम्मानित किया गया। उनके निधन से देश एक स्वतंत्रता सेनानी व सच्चे देश भक्त की सेवाओं से वंचित हो गया है। मैं अपनी तरफ से दिवंगत के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं।

मैं अपनी तरफ से श्री बक्तावर सिंह, स्वतंत्रता सेनानी के 22 अप्रैल, 2001 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता हूं। उनका जन्म 1911 में हुआ। वह आजाद हिन्द फौज में भर्ती हुए तथा बर्मा और सिंगापुर की जेल में बन्द रहे। उनके निधन से देश एक स्वतंत्रता सेनानी व सच्चे देशभक्त की सेवाओं से वंचित हो गया है। मैं अपनी तरफ से दिवंगत के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं।

मैं उन शूरवीर सैनिकों को अपना अश्रुपूर्ण नमन करता हूं जिन्होंने अपनी मातृभूमि की एकता और अखण्डता की रक्षा के लिये अदम्य साहस और वीरता से लड़ते हुए अपने जीवन का बलिदान दिया। उन महान शहीदों के नाम हैं--कार्यवाहक कमांडैंट राजेन्द्र सिंह, गांव खरकड़ा, रोहतक, नायब सुबेदार नसरूदीन गांव हिंगनपुर, गुड़गांव, सिपाही भूप सिंह गांव नैन, महेन्द्रगढ़, सवार अशोक कुमार, गांव रानीला, भिवानी, ग्रेनेडियर राकेश कुमार, गांव सुभरी, अम्बाला, नायब सुबेदार हनुमान सिंह, गांव गोठड़ा, रिवाड़ी, ग्रेनेडियर अजमेर सिंह, गांव जोरासी खास, पानीपत, लांस नायक जसबीर सिंह, गांव कोड़वा खुर्द, अम्बाला, सिपाही वीरेन्द्र सिंह, गांव धीन, अम्बाला, सिपाही जलकरण, गांव लाडयान, झज्जर, सिपाही आनन्द सिंह गांव गढ़ी सिसाना, सोनीपत, सिपाही यशपाल, गांव खेड़ी कलां फरीदाबाद। मैं इन महान वीरों की शहादत पर इन्हें शत-शत नमन करता हूं और शोक-संतप्त परिवारों के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं। इसके अलावा अगर किसी महान शूरवीर का नाम आने से रह गया है तो मैं अध्यक्ष महोदय से गुजारिश करूंगा कि उसका नाम भी अवश्य शामिल किया जाए।

इसके साथ-साथ हमारे पिछले सैशन से इस सैशन के बीच बंगलादेश के बॉर्डर पर एक बहुत बड़ा हादसा हुआ है जिसमें हमारे बी0 एस0 एफ0 के जवान शहीद हुए। बड़ी बर्बरता से उनकी हत्या की गई। मैं आपसे गुजारिश करूंगा कि उन शूरवीरों का नाम भी इस शोक

[श्री उपाध्यक्ष]

प्रस्ताव में शामिल कर लिया जाए। यह राष्ट्र उन शूरवीरों का सदैव ऋणी रहेगा जिन्होंने अपनी शहादत देकर बंगलादेश के इरादों को ना-कामयाब किया।

मैं हरियाणा विधान सभा के माननीय अध्यक्ष श्री सतबीर सिंह कादियान की माता श्रीमती फूलवती देवी के दु:खद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता हूं। मैं, हरियाणा के वित्त मंत्री श्री सम्पत सिंह के भान्जे श्री सतपाल जो कि अभी 22-23 साल की उम्र के होंगे जिनका एक दुर्घटना में अकाल निधन हो गया, के दु:खद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता हूं। मैं हरियाणा विधान सभा के सदस्य श्री बलवन्त सिंह भायना की माता श्रीमती माड़ी देवी, हरियाणा विधानसभा के सदस्य श्री जे0 पी0 शर्मा की बहन श्रीमती कौशल्या देवी, हरियाणा विधान सभा के सदस्य श्री सूरज मल अंतिल की पत्नी श्रीमती जयवन्ती देवी, हरियाणा विधान सभा के सदस्य श्री कंवर पाल सिंह के पिता श्री चन्दन सिंह तथा हरियाणा विधान सभा के सदस्य श्री पूर्ण सिंह डाबड़ा की चाची श्रीमती विद्या देवी के दु:खद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता हूं। अध्यक्ष महोदय, साथ ही साथ नेपाल में जो ताजा राजनैतिक विडम्बना हुई है, जिस पर आज सारे विश्व का ध्यान है, उस पर भी मैं अपना दु:ख प्रकट करता हूं। नेपाल हमारा पड़ोसी देश है जो हमारे छोटे भाई की तरह है। वहां पर जिस तरह की विडम्बना हुई और जिस तरह से राज परिवार का दु:खद निधन हुआ, उस पर भी मैं अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं। अध्यक्ष महोदय, अन्त में मैं सभी दिवंगतों के शोक-संतप्त परिवारों के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं।

वित्त मंत्री (प्रो0 सम्पत सिंह) : स्पीकर साहब, हमारे सदन के नेता ने जो शोक प्रस्ताव रखे हैं, उन पर मैं भी अपने विचार प्रकट करना चाहूंगा। इन शोक प्रस्तावों में विशेषकर देश के, किसानों के, मजदूरों के व गरीबों के मसीहा आदरणीय चौधरी देवी लाल जी रहे हैं, के बारे में अपनी बात कहना चाहूंगा। चौधरी देवी लाल जी के निधन से केवल हरियाणा ही नहीं, केवल कोई एक पार्टी ही नही, कोई एक विशेष जाति ही नहीं, कोई विशेष धर्म ही नहीं बल्कि सारा देश आज उनके निधन से दुखित हुआ है। अध्यक्ष महोदय, उनका इस राष्ट्र के प्रति और इस राष्ट्र के लोगों के प्रति एक अनोखा योगदान था। स्पीकर साहब, छोटी सी उम्र में, 15 साल की उम्र में, जो उम्र बच्चों की खेलने की होती है, उस उम्र में ही उन्होंने देश की आजादी के आंदोलन में भाग लेना आरम्भ कर दिया था। वे जिस परिवार में पैदा हुए थे, जिस परिवार में पले थे, उस परिवार के बच्चे तो देश की आजादी का नाम भी नहीं लिया करते थे। ऐसे माहौल में पैदा हो करके देश की आजादी में कूद पड़ना बड़ी बात है। उन्होंने अपने निजी पारिवारिक स्वार्थों को छोड़कर देश की आजादी की भावना को ध्यान में रखना उचित समझा। स्पीकर साहब, कहना आसान है लेकिन करना बहुत मुश्किल है। वे महात्मा गांधी जी के साथ रहे। यहां तक कि वे उस वक्त के हर स्वतंत्रता सेनानी के साथ रहे, चाहे वे नरम दल से संबंध रखते थे, चाहे गरम दल से संबंध रखते थे, चाहे वह दल शान्तिमय तरीके से या अहिंसात्मक तरीके से देश में प्रजातंत्र चाहते थे, चाहे कोई एग्रेसीव होकर देश की आजादी चाहते थे, उनको हरेक के साथ देश की आजादी के लिए काम करने का मौका मिला। उनको शहीदे आजम भगत सिंह जी के साथ भी रहने का मौका मिला। वे देश के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के सच्चे अनुयायी थे। उनके आह्वान पर वे कई बार जेल गए और उनके साथ भी उनको जेल जाने का मौका मिला।

अध्यक्ष महोदय, जब मुजारा आन्दोलन की बात आती है, तो उसमें चौधरी देवी लाल जी का नाम सबसे ऊपर आता है। जब मुजारा आंदोलन की बात को ध्यान से देखते हैं तो हम सभी के रौंगटे खड़े हो जाते हैं। आज तो हम सभी आदमी सोचते हैं कि हम सभी जमीन के मालिक हैं। यहां पर विपक्ष के नेता भी बैठे हैं। आप सभी जानते हैं कि उस वक्त एक-एक ठेकेदार कई-कई गांव के मालिक हुआ करते थे। उस वक्त आन्दोलन चलाना कोई छोटी बात नहीं थी। उस वक्त वह आन्दोलन चलाना और ऐसे परिवार में जहां खुद बड़े जमींदार हों, बड़े लैण्डलोर्ड परिवार से हों, में पैदा होने के बावजूद उन्होंने आंदोलन चलाया। चेरेटी बिगिन्स एट होम यानि जब तक आप घर से कोई काम स्टार्ट नहीं करते तब तक कोई बात नहीं बनती। चौधरी देवी लाल जी ने मुजारा आंदोलन अपने घर से शुरु किया। उन्होंने अपनी जमीन का मालिक मुजारों को बनाया। अध्यक्ष महोदय, चौधरी देवी लाल जी के बारे में एक किस्सा चौटाला साहब बताया करते हैं कि परिवार का कोई सदस्य कोर्ट के अन्दर किसी मुजारे के खिलाफ चला गया था तो चौधरी देवी लाल जी ने खुद कोर्ट में जाकर गवाही मुजारे के हक में ही दी। अध्यक्ष महोदय, ऐसे बिरले इंसान ही मिलेंगे जिन्होंने मुजारों के लिए इतना काम किया हो। चौधरी देवी लाल जी ने मुजारों को उनका मालिकाना हक दिलाया। देश की आजादी के बाद भी इस देश की आजादी को बरकरार रखने में भी उन्होंने बहुत अहम् भूमिका निभाई। स्पीकर साहब, आप तो बहुत बड़े बुद्धिजीवी हैं, हाउस में बहुत ज्यादा पढ़े लिखे लोग बैठे हैं, सभी साथी अच्छी तरह से सब कुछ समझते हैं। देश की आजादी के बारे में पंडित जवाहर लाल नेहरु जी ने कहा था कि देश की आजादी तो हमें मिल गई लेकिन इस आजादी को कायम रखना सबसे मुश्किल काम है क्योंकि Eternal vigilance is the price of liberty. इसी बात के सिद्धान्त को चौधरी देवी लाल जी ने माना और उसको मानते हुए अपने राजनीतिक स्वार्थों से हटकर, पार्टी के हितों से हट कर राष्ट्रहित और प्रजातन्त्र को सबसे ऊपर रखा। जहां तक हरियाणा के निर्माताओं की बात है, आज हरियाणा के परिवर्तन एवं विकास में हर व्यक्ति का कुछ-न-कुछ योगदान है लेकिन स्पीकर सर, इस देश के भौगोलिक नक्शे पर हरियाणा प्रदेश का नाम लाने के लिए अगर किसी एक व्यक्ति को श्रेय दिया जा सकता है तो वह चौधरी देवी लाल जी हैं। हरियाणा बनाने के लिए उन्होंने एक मूवमैंट खड़ा किया और प्रदेश की 36 बिरादरियों को साथ ले कर चले और उन सभी लोगों ने हर प्रकार से उनकी मदद की। अपने पार्टी के हितों को छोड़ कर उनकी मदद की लेकिन जिस ढंग से उन्होंने प्रदेश की अगुवाई की थी वह अपने आप में बड़ी चीज थी। उन्हें इस बात की बहुत बड़ी चिन्ता थी कि इस तरह का एक स्टेट बने। वे ऐसा क्यों चाहते थे ? किसी राजनीतिक स्वार्थ की वजह से वे ऐसा नहीं चाहते थे। अध्यक्ष महोदय, आज तो इस प्रकार के काम लोग राजनीतिक स्वार्थ की वजह से करते हैं लेकिन चौधरी देवी लाल जी के दिमाग में सिर्फ एक ही नक्शा था कि इस इलाके के साथ भेदभाव हो रहा है तथा इस इलाके के साथ ज्यादती हो रही है, यहां पर विकास के काम नहीं हो रहे हैं और यहां के लोगों को राजनीति में हिस्सेदारी नहीं मिलती है। अध्यक्ष महोदय, अगर राजनीति में हिस्सेदारी नहीं मिलेगी तो उस प्रदेश और उस इलाके के काम नहीं होंगे। बहुत से लोग इल्जाम लगाने की कोशिश करते हैं और राजनीति में तो यह आम बात है। जब भी कोई आदमी कोई मूवमैंट शुरु करता है तो उसके विरोधी पक्ष के लोग प्रचार करते हैं कि वह पद चाहता है इसलिए मूवमैंट चला रहा है। चौधरी देवी लाल जी के विरोधी भी उस समय यह कहते थे कि उन्होंने यह जो मूवमैंट चलाया है वह इसलिए चलाया है क्योंकि वह यहां के मुख्य मन्त्री

[प्रो0 सम्मत सिंह]

बनना चाहते हैं। स्पीकर साहब, क्या आपको ऐसा कोई आदमी मिलेगा जो यह कहे कि हरियाणा तो बनेगा लेकिन चौधरी देवी लाल उसमें पहला चुनाव नहीं लड़ेगा ? उन्होंने ऐसा करके भी दिखाया और अपना वचन निभाया। हरियाणा प्रदेश 1 नवम्बर, 1966 को बना और जब उसका पहला चुनाव हुआ तो चौधरी देवी लाल जी ने वह चुनाव नहीं लड़ा। इसी प्रकार की भावनाओं से देश और प्रदेश आगे बढ़ते हैं। उन्होंने कभी भी राजनीतिक भावनाओं को देश से ऊपर नहीं होने दिया। राष्ट्र या प्रदेश के हित के ऊपर उन्होंने कभी भी अपनी भावनाओं को तरजीह नहीं दी। अध्यक्ष महोदय, जहां तक ईमानदारी का सवाल है, वे बहुत ही ईमानदार रहे। उनके घर में सब कुछ था। उनको जो भी पैसे की आमदनी होती थी वे अपने घर से उठा कर लोगों के लिए खर्च कर दिया करते थे और घर के लोग पैसों और चीजों के लिए तरसते रह जाते थे। उनका माल्टों का बाग हुआ करता था। मैंने खुद देखा हुआ है क्योंकि मैं चौधरी देवी लाल जी के साथ खुद रहा हुआ हूं और मेरा उनके साथ शुरु से ही बड़ा लगाव रहा है। सब्जी मण्डी में जब माल के ठेकेदार आते थे तो एक तरफ से पैसे लेने के लिए इनके घर के लोग आते थे और दूसरी तरफ से चौधरी देवी लाल जी पैसे लेने के लिए आते थे ताकि ठेकेदारों से पैसे ले सकें। घर के सदस्यों की बजाय वे खुद पैसे लेते थे और अगर उस वक्त कोई राजनीतिक वर्कर या कोई गरीब पीड़ित किसी प्रकार की मदद के लिए उनके पास आ जाए तो वे अपने घर के पैसे उसको देते थे। अपनी जेब में उन्होंने कभी एक नया पैसा नहीं रखा। लोगों ने भी उनको देने में कोई कमी नहीं छोड़ी। प्रदेश के लोगों ने उनको खूब इज्जत और धन माल दिया और जिस भी चीज की उन्हें आवश्यकता पड़ी, लोगों ने उन्हें वह उपलब्ध करवाई यहां तक कि लोगों ने उनके लिए खून भी दिया। उनकी बहुत बड़ी कुर्बानी रही है। स्पीकर सर, आप तो स्वयं बड़ी अच्छी तरह से जानते हैं कि शाम का समय होता था कोई भी आदमी चाहे कहीं से भी आता था तो वे उसकी मदद किया करते थे। हमारे जैसे लोग तो उनकी दया से ही एम0 एल0 ए0 और वजीर बने हैं। शाम को जब कभी उनकी कोठी पर जाया करते थे तो वे पूछते थे कि खाना कहां खाया और कहां ठहरे हो । कहने का मतलब यह है कि वे इस बात की बहुत चिन्ता किया करते थे और जब हम कहते थे कि हरियाणा भवन में रुके हैं तो कहा करते थे कि तुम तो वजीर हो इसलिए हरियाणा भवन में कमरा मिल गया। लेकिन उनकी चिन्ता देखिए कि जब कोई गांव का गरीब आदमी उनके पास जाता था तो बिना खाना खाए और बिना ठहराए वे उसको वापस नहीं जाने देते थे। स्पीकर सर, इसी तरह से जहां तक वचन का सवाल है, आज वचन पर राजनैतिक लोग कितना पक्का रहते हैं यह सभी जानते हैं लेकिन चौधरी देवी लाल जी ने जो भी वचन दिया उसे पूरा निभाया। जैसे कि मैंने हरियाणा बनने का जिक्र किया, उन्होंने अपना वचन निभाया। मैं उनकी छोटी-छोटी बातों और कुर्बानियों की बात नहीं करता। देश के प्रधान मंत्री बनने का सवाल था। उन्होंने उसके लिए सारे देश में एक माहौल पैदा किया, एक लहर चलाई और राजनैतिक गठबन्धन तैयार किया और जनता दल के रूप में एक पार्टी तैयार करने के बाद सीधा नारा यह दिया कि वे वी0 पी0 सिंह को प्रधान मंत्री बनाएंगे। उसके बाद देश की पार्लियामैंट के मैम्बर्ज ने उनको प्रधान मन्त्री चुन लिया। टैलीविजन पर सीधा प्रसारण हो रहा था। उस वक्त उनको केवल इतना कहना था, "आपका धन्यवाद" और उसके बाद प्रधान मंत्री की शपथ लेनी थी लेकिन उन्होंने अपना वचन निभाया। हालांकि उनकी इस बात से उनके दोस्त नाराज भी बहुत हुए। बाद में देश में क्या हालात हुए वह एक अलग चीज है लेकिन उन्होंने एक बार जो वचन दिया उस

वचन को उन्होंने निभाया। स्पीकर सर, जहां तक देश की आजादी की बात है, देश में प्रजातन्त्र का सवाल है चाहे वह विधायिका, न्यायपालिका और कार्यपालिका है इनके अधिकारों का हनन होने लगा था। जब प्रजातन्त्र पैरों के तले रौंदा जाने लगा तो इस बात से ऊपर उठकर के, राजनीति से ऊपर उठकर चौधरी देवी लाल जी हमेशा आगे आए। इसकी एक मिसाल है रोड़ी का बाई इलेक्शन। रोड़ी के बाई इलेक्शन के बारे में उन्होंने कहा था कि मैं एम0 एल0 ए0 बनने के लिए इलेक्शन नहीं लड़ रहा हूं मैं यह इलेक्शन सिर्फ इसलिए लड़ रहा हूं कि यह जो लोगों की जुबान बंद हो रही, वह खुल जाए। स्पीकर सर, उन्होंने यह चुनाव लड़ा और लोगों ने उसका नतीजा प्रजातन्त्र के पक्ष में दिया। स्पीकर सर, उन्होंने एम0 एल0 ए0 की शपथ नहीं ली। लेकिन आज एम0 एल0 ए0, मैम्बर पंचायत के लिए, सरपंच बनने के लिए सिर कटवा लेते हैं। उन हालातों में उन्होंने एम0 एल0 ए0 का चुनाव लड़ा और उस चुनाव को जीत कर शपथ नहीं ली यह किस बात को दर्शाता है। यह इस बात को दर्शाता है कि उनमें राजनीतिक भावना और राजनीतिक स्वार्थ नहीं था। उसमें केवल यही कारण था कि जो प्रजातन्त्र है वह बहाल रह जाए। उनके दिमाग में बस यही एक जज़बा रहा और उस जज़बे में वे हमेशा कामयाब रहे। आज स्पीकर साहब, जहां देश की, प्रदेश की राजनीति में हर पार्टी कोशिश करती है कि सबका ध्यान रखा जाए लेकिन फिर भी कहीं न कहीं पर थोड़ा बहुत जात-पात का, कहीं धर्म का, कहीं भाषा का कुछ न कुछ अड़ंगा जरूर रहता है। इससे क्या होता है कि जो छोटी-छोटी कम्युनिटीज में पैदा होते हैं ऐसे लोगों को विधान सभा और पार्लियामैंट का मुंह देखने को नहीं मिलता है। चौधरी देवी लाल जी के दिमाग में उनके प्रति भी एक टीस सी थी, तकलीफ थी कि अगर ये लोग भी राजनैतिक तौर पर आगे आएंगे तो उनका समाज भी आगे ऊपर उठेगा। राजनैतिक सत्ता के बाहर आजकल हर चीज घूमती है। जैसे बैरागी बिरादरी, झीमर बिरादरी, बाजीगर बिरादरी हो और जो भी छोटी छोटी बिरादरियां थीं उनको टिकट देकर चुनाव लड़वाना और उनको चुनाव जिताना यह कोई आम बात नहीं थी वे इस तरह से उन बिरादरियों को सम्मान दिया करते थे। वे 36 बिरादरियों को साथ लेकर चलते थे और यह उनकी अपने आप में एक ही मिसाल थी। स्पीकर सर, जहां तक किसानों का सवाल है उन्होंने अपने जीवन में शुरु से लेकर आखिर तक किसानों के लिए काम किया है। उस बारे में मुख्यमंत्री जी ने और दूसरे साथियों ने भी यहां पर बातें कही हैं। स्पीकर सर, जब वे अपने जीवन की आखिरी सांस ले रहे थे उस वक्त भी उनके दिमाग में किसानों के लिए भावना थी, यह भी अपने आप में एक अलग बात है। स्पीकर सर, जब उनसे मिलने रोहतक से मैम्बर आफ पार्लियामैंट कैप्टन इन्द्र सिंह जी गए थे तो उन्होंने उनसे पूछा कि ओले पड़ गए हैं आप क्या करने जा रहे हैं ? हरियाणा सरकार क्या दे रही है, केन्द्र सरकार क्या मदद करेगी ? स्पीकर सर, आप यह देखिए कि एक टीस, एक दर्द किसान के प्रति उनके दिमाग में कितना था। आखिरी दम पर उनको यह चिन्ता नहीं थी कि वे दुनिया से जा रहे हैं। उन्हें यह चिन्ता थी कि आज प्रदेश में किसान की क्या हालत है, उसकी देखभाल कैसे होगी ? इस तरह की उनकी भावना थी।

स्पीकर सर, अगर सादगी का जीवन देखना हो तो चौधरी देवी लाल जी के जीवन को देखें। उनके जीवन से शिक्षा लें। स्पीकर सर, 1978 में बाढ़ आई थी। चौधरी धीर पाल जी के हल्के बादली में बाढ़सा गांव दिल्ली के बोर्डर पर पड़ता है। शाम के टाईम वे वहां पर गए और रात को वे वहीं पर रहे थे। वे किसानों की बात को समझते थे, उनके दर्द को अपना समझते थे।

[प्रो0 सम्पत सिंह]

स्पीकर सर, उस समय वहां पर जमीन सख्त हो गई थी। चौधरी देवी लाल जी ने आईशर और एस्कार्ट कम्पनी से ट्रैक्टर मंगवाए और उस सख्त जमीन पर जुताई करवाई। यह कोई छोटी बात नहीं है। आदमी किसी की पैसा देकर मदद कर देता है लेकिन जुताई करवाना बहुत ही अच्छी बात है। चौधरी देवी लाल जी ने उस समय वहां पर रजाईयां बंटवाई थीं। रात को वे बाढ़सा गांव में ही ठहरे थे जिस जगह में वे ठहरे थे वहां पर कोई दरवाजा नहीं था वहां पर बोरी की पल्ली लगी हुई थी। उनके मन में आफिसर के प्रति भी बहुत अच्छी भावना थी और वे आफिसर्ज को बहुत ही अच्छी तरह से लैसन सिखाते थे। वहां पर रात को डी0 सी0 और एस0 पी0 उनके पास गए और सैल्यूट मारकर कहने लगे कि सर हम जा रहे हैं और कल सुबह आ जाएंगे। चौधरी देवी लाल जी ने उनसे क्या कहा यह मैं आप सबको बताना चाहूंगा, हालांकि यह एक छोटी सी बात है लेकिन एक गम्भीर बात है। उन्होंने उनको यह कहा कि आपकी गाड़ी पानी से तो नहीं चलती है तेल से चलती है, आप भी गांव में रहें और गांव के जीवन को देखें। आप गांव के लोगों के बीच में रहेंगे, अपने आप को गांव के लोगों के साथ इन्वौलव करेंगे तभी तो आपको उनके बारे में कुछ पता चलेगा कि गांव के लोग क्या हैं और किस तरह का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इनके जीवन से आप कुछ सीखेंगे। चौधरी देवी लाल जी हर आदमी को कुछ न कुछ सीखाने की कोशिश में रहते थे। उनका इस तरह का जीवन था। स्पीकर सर, आज हम लोग हैं, उनकी वजह से चाहे राजनीतिक कद में कितने ही ऊंचे हो गए होंगे लेकिन जब भी कहीं पर जाते है तो हमारे दिमाग में राजनीतिक भावना जरूर रहती है। हम जब भी किसी गांव में जाकर गाड़ी खड़ी करते हैं तो यह सोचते हैं कि कहीं गलती से किसी दूसरी पार्टी के कार्यकर्ता के घर के आगे गाड़ी खड़ी न हो जाए। कहीं कोई पार्टी का वर्कर उलाहना न दे दे कि फलाने के घर के आगे जाकर आप रुक गए वह तो हमारी पार्टी का विरोधी था लेकिन चौधरी देवी लाल जी इन सब चीजों से ऊपर थे। किसी भी गांव में गए उन्होंने कभी भी नहीं देखा कि किस पार्टी के वर्कर का घर है, वह किस जाति का है या किस बिरादरी का है। उनको जहां भी दस आदमी मिले वहीं पर वे अपनी गाड़ी रोक लेते थे। उनकी पर्सनालिटी ही ऐसी थी। उनके प्रति पब्लिक का आकर्षण ही ऐसा था कि हजारों लोग एकदम वहीं पर इकट्ठा हो जाते थे और अपनी तकलीफों को उनसे बताकर लोग उनसे यह कहा करते थे कि चौधरी साहब हम आपसे अपनी तकलीफों को बताने नहीं आए हैं बल्कि हम तो आपकी सेहत के बारे में जानने आए हैं कि आपका हाल चाल कैसा है। लोग अपनी तकलीफों को भूल जाया करते थे। स्पीकर साहब, चौधरी साहब के कहीं आने जाने के बारे में उस समय ओफिसर्ज को भी पता नहीं चल पाता था कि मुख्य मंत्री किस गांव के अंदर चले गए हैं। वे असली बात को और असली तकलीफ को ढूंढने के लिए ही गांवों के अन्दर जाया करते थे। स्पीकर साहब, एक बार की बात है। चौधरी साहब तोशाम में रुके हुए थे। यह 1977-78 की बात है। सुबह-सुबह पांच बजे उठकर वे खड़कड़ी-झावरी गांव में चले गए। उस समय वहां पर लोग सोकर उठ ही रहे थे। जब उनको पता लगा कि चौधरी साहब आ गये हैं तो उसी समय ही वहां पर सारे लोग इकट्ठा हो गये। वे लोग उनके लिए दूध वगैरह ले आए। चौधरी साहब उनसे कहने लगे कि और सुनाओ भाईयों क्या हालचाल है, आपको कोई तकलीफ तो नहीं है ? वहां के लोग कहने लगे कि अगर दोनों गांवों के बीच में एक हाई स्कूल बना दिया जाए तो यहां के लोगों का भला हो जाएगा। चौधरी साहब ने एक प्याला दूध का पिया और वहां एक हाई स्कूल खोलने का आदेश दे दिया। वे कहने लगे कि देखो कितना खर्च बच गया। अगर मैं प्लान-

वे में आता तो तुम्हें हजारों रुपये खर्च करने पड़ते लेकिन अब मेरे आने से तुम्हें हाई स्कूल भी मिल गया और तुम्हारा खर्च भी बच गया वरना तो आप लोग बीस मांगों का चार्टर लेकर खड़े होते और वह पूरा भी नहीं होना था। स्पीकर साहब, अगर आप अचानक कहीं जाओगे तो जो लोगों की असली तकलीफें हैं वह सामने आ जाती हैं। उस समय ही लोग अपना सही दर्द आपको बताएंगे। उस समय भी लोगों ने अपना दर्द चौधरी साहब को बताया और उन्होंने वह दूर कर दिया। स्पीकर साहब, अनेकों ऐसे उदाहरण हैं जो उनकी जिंदगी से सीखने को मिलेंगे। स्पीकर साहब, 1977 में मुख्यमंत्री बनने के बाद उनके पास कुरुक्षेत्र का एक अवतार सिंह नाम का सिख लड़का आया और कहने लगा चौधरी साहब मुझे आप बिजली बोर्ड में एल0 डी0 सी0 वगैरह की कोई नौकरी दिलवा दें। चौधरी साहब ने कहा कि तू अपनी ऐप्लीकेशन वगैरह दे जा। जे0 पी0 मूवमैंट के दौरान जब चौधरी साहब कुरुक्षेत्र की जेल में थे उस समय यह लड़का उनको जेल में बाल्टी में दाल रोटी लाकर दिया करता था। स्पीकर साहब, नौकरी लेने के लिए भी कुछ नियम पूरे करने होते हैं। पहले नौकरी निकलती है, इंटरव्यू वगैरह होते हैं और तब जाकर किसी का सलैक्शन होता है। पांच दस दिन के बाद जब वह लड़का फिर उनके पास आया तो उनको तकलीफ हुई, वे कहने लगे कि इसको सही मायनों में नौकरी की जरूरत है। उन्होंने उस लड़के से कहा कि तेरा जल्दी ही बन्दोबस्त करेंगे। स्पीकर साहब, उस समय मैं उनके पास ही बैठा था। वे मेरे से कहने लगे कि सम्पत यह लड़का नौकरी लेने के लिए आया है लेकिन अगर हम इसको नौकरी देने वाला बना दें तो कैसा रहेगा। मैं हैरान कि नौकरी देने वाला कैसे बना सकते हैं ? चौधरी साहब कहने लगे कि इसको हम एस0 एस0 एस0 बोर्ड का मैम्बर बना देते हैं। उन्होंने कहा कि उस लड़के को बुलवाओ । बाद में वह लड़का आया और उन्होंने उसको एस0 एस0 एस0 बोर्ड का मैम्बर बना दिया। इस तरह से उनके जीवन की कितनी बातें ऐसी हैं जिनको समाप्त नहीं कर सकते । आप उनके इस तरह के कितने ही किस्से सुन सकते हैं। जहां तक पब्लिक से जुड़ा रहने का सवाल है इस बारे में मैं कोई राजनीतिक बात नहीं कर रहा हूं। लेकिन उन्होंने हमेशा पब्लिक से जुड़ा रहने की कोशिश की है। चाहे वे चुनाव जीते हों या हारे हों, चाहे वे विपक्ष में रहें हों या चाहे वह राज में रहे हों लेकिन वे हमेशा पब्लिक से जुड़े रहे। कभी-कभी तो दूसरे लोग उनकी इस तरह की बातों का मजाक उड़ाया करते थे। स्पीकर साहब, 1979 में जब पार्टी के अंदर बगावत हुई और बगावत के बाद जिस तरीके से चौधरी भजन लाल जी ने मैम्बर्ज को अपने साथ लेकर सरकार बनायी थी उस समय भी आपको याद होगा कि वे कपाड़ो और मनभौरी गांवों में जलसा कर रहे थे। उस समय डी0 आई0 जी0 (सी0 आई0 डी0) ने जब उनको रिपोर्ट दी कि चौधरी साहब आपके वजीर और एम0 एल0 एज0 तो भाग रहे हैं और आप यहां पर जलसा कर रहे हैं। आप चण्डीगढ़ चलें। आप यहां क्या कर रहे हैं ? वे कहने लगे कि मैं चण्डीगढ़ जाकर क्या करूंगा ? मेरी ताकत तो यही है अगर यह ताकत मेरे साथ रहेगी तो चण्डीगढ़ में तो राज मुझे फिर से मिल जाएगा। वे फिर भी वहीं पर जलसा करते रहे। सरकार चली गई लेकिन उन्होंने इस बात की कोई परवाह नहीं की। वे तो पब्लिक के साथ जुड़ा रहना चाहते थे। स्पीकर साहब, आज कोई एम0 एल0 ए0 बनने के बाद अपनी गाड़ी पर लाउडस्पीकर बांधते हुए शरमाता है। वह सोचता है कि मैं यह खुद क्यों बांधू ? किसी और पार्टी वर्कर के जिम्मे यह काम लगाने के बारे में वह सोचता है लेकिन चौधरी साहब ने अगले दिन ही अपनी गाड़ी पर लाउडस्पीकर बांधा और दिल्ली से डबवाली तक दो दिन में उन्होंने 70 मीटिंग्ज की। उस समय मैं भी उनके साथ था। स्पीकर साहब, इतना अदम्य साहस रखने वाला व्यक्ति राजनीति के अंदर विरला ही होता है।

[प्रो० सम्पत सिंह]

इसी तरह से जहां तक विरोधियों के प्रति चौधरी देवीलाल जी के रुख का सवाल है, वे जब भी रोहतक से गुजरे उन्होंने पंडित श्रीराम शर्मा से जरुर मुलाकात की। शर्मा जी उन दिनों जीवित थे लेकिन काफी बीमार रहते थे और चारपाई पर पड़े रहते थे। उस समय एक अखबार निकलता था। उस अखबार में काफी इधर-उधर की बातें चाहे हक में या खिलाफ हुआ करती थीं, पढ़ा करते थे। आम आदमी यह सोचता था कि पंडित जी तो चौधरी देवी लाल जी के बहुत खिलाफ लिखते हैं और चौधरी साहब जब वहां से निकलते थे तो सीधे उनके घर जाते। बर्कर यह कहते थे कि चौधरी साहब आप यह क्या कर रहे हो ? यह आपका इतना कट्टर विरोधी आदमी है, खाट पर पड़ा है और आप इसके पास जाकर बैठ जाते हो और इसकी इज्जत बढ़ा देते हो। स्पीकर सर, इस पर वे क्या कहते थे यह आज की पीढ़ी के लिए सुनने वाली बात है-कहते थे मैं आज के पंडित श्री राम शर्मा इनमें नहीं देख रहा हूं जो खाट पर पड़ा है, बीमार है और बूढ़ा आदमी है। मैं 1947 के पहले जो देश की आजादी की लड़ाई लड़ रहा था उस पंडित श्री राम शर्मा को इनमें देख रहा हूं। इनके अंदर कितने गुण हैं तुम क्या जानो ? तुम अभी बच्चे हो। इतनी बड़ी महानता और गुण उनमें ही थे। जैसे कोई नाराज हो गया, कोई विरोधी हो गया तो उसे सीधे टैलीफोन करना और उसके घर सीधे पहुंच जाना उनमें आम बात थी। इस तरह की बातें आज राजनीति में बहुत कम लोगों में मिलती हैं। उनका हृदय बहुत उदार था । अपने खुद के गांव चौटाला के अंदर चौधरी श्योकरण गोदारा से उनकी आपस की काफी टसल थी और राजनीति लड़ाई थी। 1977 में चौधरी देवी लाल मुख्यमंत्री बने। उससे पहले एमरजैंसी का काफी काला अध्याय रहा । उस टाइम उनके घर का ट्रैक्टर भी, जमीन की फसलें भी और इसके अलावा सब कुछ उनका बर्बाद कर दिया था। चौधरी श्योकरण गोदारा जी चौधरी कुंभा राम आर्य जी को साथ लेकर 1977 में जब देवी लाल जी के घर आये तो श्योकरण गोदारा ने एक ही सैंटैंस कहा था कि देवी लाल मैं देवी लाल के साथ लड़ सकता था लेकिन अब मैं मुख्यमंत्री के साथ नहीं लड़ सकता। चौधरी देवी लाल जी ने कहा कि श्योकरण, इसमें कुंभा राम को लाने की क्या बात थी, ठीक है तेरी मेरे से बात थी लेकिन मेरी तो तेरे से कोई लड़ाई नहीं थी। किसी किस्म की कोई बात नहीं थी, आपने क्या किया, क्या नहीं किया लेकिन मेरे दिमाग में कोई बात नहीं है। स्पीकर सर, इस तरह का उदार दिल रखना यह भी कोई छोटी बात नहीं है। अन्य बातों का जिक्र न करते हुए मैं एक बात का और उल्लेख करना चाहूंगा कि उनको चाहे बहुत चीजों का हैंडीकैप्ड था उसके बाद भी अगर किसी छोटे से प्रदेश के मुख्यमंत्री को अंतराष्ट्रीय स्तर पर इज्जत मिली है तो वह चौधरी देवी लाल जी को मिली है। जिमी कार्टर अमेरिका के राष्ट्रपति थे और 1977-78 के दौरान वे भारत आए थे और कार्टरपुरी नाम भी रखा था उनकी मां या दादी मां रही थीं उस वक्त । जिमी कार्टर ने चौधरी देवीलाल जी में जो किसान का रूप देखा था उसको देखते हुए खुद जिमी कार्टर जो कि एक बहुत ही सुलझे हुए किसान थे। उन्होंने चौधरी देवी लाल को यू० एस० ए० आने के लिए निमंत्रण दिया था। यह अलग बात है कि किसी कारण वे अमेरिका नहीं जा सके। स्पीकर सर, किसी छोटे प्रदेश के मुख्यमंत्री तो क्या बड़े प्रदेश के मुख्यमंत्री को भी अमेरिका के राष्ट्रपति ने निमंत्रण नहीं दिया। अमेरिका के राष्ट्रपति के निमंत्रण के लिए राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री भी तरस जाते हैं। चौधरी देवी लाल जी को अमेरिका जाने का निमंत्रण 1977 में एक किसान के रूप में दिया था न कि मुख्यमंत्री के रूप में निमंत्रण दिया था। यह भी अपने आप में एक बहुत बड़ी बात है। उनका जो राजनैतिक कद था उसी को ध्यान में रखते हुए उनको

मरणोपरान्त इस देश के लोगों ने जो सम्मान दिया और राष्ट्र ने जो सम्मान दिया है वह भी अपने आप में उल्लेखनीय है। महात्मा गांधी व पंडित जवाहर लाल नेहरू के बाद अगर इस तरह का सम्मान किसी को मिला है तो वह चौधरी देवी लाल जी को मिला है। देश की कोई ऐसी राजनीतिक पार्टी, कोई ऐसा क्षेत्र, कोई इलाका, कोई भाषा बोलने वाला व्यक्ति क्यों न हो, हरेक ने चौधरी साहब को मरणोपरान्त सम्मान दिया है, इज्जत दी है इससे उनकी सारी की सारी जिंदगी की जो कमाई थी, वह पूरी हो गई। यह बात अलग है कि आज देश और प्रदेश के सभी लोग उनकी सेवाओं से वंचित हो गए हैं। चौधरी देवी लाल जी जैसे व्यक्ति कभी मरा नहीं करते हैं जब तक उनके आदर्श के ध्वजारोहक उनको आगे चलाने वाले लोग जीवित हैं तब तक उनके आदर्श हमेशा जीवित रहेंगे। स्पीकर सर, मैं सच्ची श्रद्धांजलि उनको यही अर्पित करता हूं कि हम सब लोगों को परमात्मा ताकत दे ताकि हम उनके चलाए हुए रास्ते पर चल सकें। इसी तरह से जितने भी दूसरे नाम इस प्रस्ताव में आए हैं मैं उन सबका समर्थन करता हूं और एक और नाम इनमें जोड़ना चाहता हूं। श्री भगवान सहाय रावत जी जो इथीन से विधान सभा के सदस्य हैं उनके समधी श्री भगवत सिंह जी का भी 16 मई को दुखद निधन हो गया, उनके प्रति भी मैं शोक प्रकट करता हूं। स्पीकर सर, चौधरी देवी लाल इस प्रदेश के लोगों के, इस प्रदेश के किसानों के, गरीब आदमियों के मसीहा रहे हैं और सारे देश के लोगों के मसीहा रहे हैं इसलिए मैं अपनी तरफ से निवेदन करना चाहूंगा कि आज शोक प्रस्ताव पास होने के बाद हाऊस को एडजर्न कर दिया जाये। यह मेरा सुझाव है। धन्यवाद।

नगर एवं ग्राम आयोजना मंत्री (श्री धीरपाल सिंह) : आदरणीय अध्यक्ष जी, आज हाऊस के नेता ने जो शोक प्रस्ताव हाऊस के सामने रखा है मैं भी उन शोक प्रस्तावों का समर्थन करते हुए अपनी बात कहना चाहता हूं। आदरणीय चौधरी देवी लाल जी के निधन के बाद जो उनके शिष्य थे जिन्होंने उनके साथ काम किया और उसके अलावा स्पीकर साहब उनके साथ काम करने के बाद ऐसा अहसास होता है कि आज हम उनके आशीर्वाद से वंचित हो गये हैं हाऊस के नेता ने और दूसरे साथियों ने और क्वि मंत्री जी ने कई बातों पर प्रकाश डाला। स्पीकर साहब मैं एक बात कहना चाहता हूं कि हमें जो राजनैतिक ज्ञान प्राप्त हुआ है यह आजादी के बाद का ज्ञान है लेकिन चौधरी देवी लाल जी ने जिस परिवार में जन्म लिया और उसके बाद बाल्यकाल अवस्था में परिवार के खिलाफ बगावत करके ऐसे समाज के निर्माण में उन्होंने अहम् भूमिका निभाई कि जो भूमिहीन मजदूर थे उनके परिवारों को जिन्दा रहने का हक दिलाया। स्पीकर साहब, आज के समय में और उस समय में बहुत अन्तर है। उस समय कोई मौलिक अधिकार नहीं थे। आज तो मौलिक अधिकार हैं, संविधान और प्रशासन है। इसका कारण यह है कि जब हम उन लोगों के पास जाते हैं तो वे खुले मन से पूरी गहराई के साथ उनका आभार व्यक्त करते हैं। बाढसा गांव दिल्ली बोर्डर पर है। जनता पार्टी के समय में भयंकर बाढ़ आने के कारण बाढसा रैस्ट हाऊस में जगह नहीं थी क्योंकि देश की राजधानी दिल्ली नजदीक होने के कारण गृह मंत्री वहां पर आये हुए थे इसलिए चौधरी साहब ने उस गांव के सरपंच मीरसिंह से उसके घर पर रहने की भावना व्यक्त की। सर्दी का समय और गेहूं की बिजाई का समय था। श्री मीरसिंह जी ने कहा कि चौधरी साहब मेरे घर में रहने की जगह नहीं है और मेरे घर में सब्जी भी नहीं है। इस पर चौधरी देवी लाल जी ने कहा कि बथवा तो होगा ही। चौधरी साहब मीर सिंह के घर पर रुके और बथवे की सब्जी खाई और सादी रोटी खाई और वहां पर सोये जहां पर मीरसिंह के बैल बंधे हुए थे।

[श्री धीरपाल सिंह]

यह सिर्फ भावना की बात थी। ऐसी जगह जहां पर बैल बंधते हैं और उनका गोबर होता है वह कैसी जगह होती है जो आदमी किसान के परिवार से जुड़ा है वह अच्छी तरह से परिचित है। लेकिन प्रदेश का मुख्यमंत्री वहां पर रहे जहां उस गांव का सरपंच अपने जानवरों के साथ सोता है, उसी चारपाई पर उसी रजाई में सोता है जो उसको दी गई है और उसके अलावा बथवे की सब्जी और सादी रोटी खाकर वहां पर रहता है तो यह उनकी गरीबों के प्रति और किसानों के प्रति भावना थी। यह सब हमें आजादी के बाद मिला। चौधरी देवी लाल जी के प्रयास से उनकी मेहनत से 1987 में हमारी सरकार बनी तो उन्होंने कहा कि वे बुढ़ापा पैंशन देंगे क्योंकि उनको यह काम करने का एक अच्छा मौका मिला था। परन्तु लोगों ने यह महसूस किया कि वे पैंशन कैसे देंगे ? मैं इसके बारे में एक बात बताना चाहता हूं। माननीय अध्यक्ष महोदय, बराई गांव बहादुरगढ़ के साथ है। सर्दी का मौसम था, बी0 बी0 सी0 की टीम हरियाणा के विकास कार्यों को देखने के लिए इस गांव में आई हुई थी। उस समय 2 महीने की पैंशन वितरित की हुई थी। कई बुजर्गवार चौपाल में आए और गौंद के लड्डू लेकर आए। चौधरी साहब तो इन लड्डूओं के बारे में जानते थे लेकिन बी0 बी0 सी0 की टीम इन लड्डूओं से परिचित नहीं थी। टीम को ये लड्डू तोड़कर खिलाए गए तो उनको स्वाद लगे और उन्होंने कहा कि वट इज दिस तो चौधरी साहब ने कहा दिस इज पैंशन। उन्होंने कहा घर का प्रमुख आदमी जिसके पास कमाई का कोई साधन नहीं होता सर्दी के मौसम में लड्डू खाकर पैंशन के गीत गा रहा है। चौधरी साहब की इस प्रकार की नीतियां थी। मैं तो यह कहता हूं कि आजादी के बाद समाज को व्यवहारिकता देने का काम अगर किसी ने किया है तो वह चौधरी देवी लाल जी ने किया है। 1947 में देश आजाद हुआ और 1987 में बुढ़ापा पैंशन आई। चौधरी साहब के मुख्यमंत्री बनने से पहले साइकिल टैक्स और ट्रैक्टर टैक्स लगाए जाते थे। किसानों को पकड़ा जाता था और चालान ठोके जाते थे, चौधरी साहब ने महसूस किया कि यह तो किसानों के साथ ज्यादती है। चौधरी देवी लाल जी 1987 में मुख्यमंत्री बने तो उन्होंने कारखाने में काम करने वाले मजदूर की, कृषि क्षेत्र में काम करने वाले किसान की मजदूरी तय की ताकि एक गरीब आदमी को इतनी मजदूरी और तनख्वाह मिलें जिससे उसको पेट भर रोटी मिल सके। इस प्रकार चौधरी साहब ने किसानों और मजदूरों का भला किया। जहां तक कर्मचारियों की बात है 1987 में जब चौधरी देवीलाल जी मुख्यमंत्री बने उस समय जितनी हमारी सहकारी मिल्ज थी वे सारी घाटे में चल रही थीं। चौधरी देवीलाल ने मुख्यमंत्री बनते ही सभी सहकारी मिल्ज के कर्मचारियों को और एम0 डीज0 को बुलाकर कहा कि मिल्ज घाटे में हैं, यह काम आपका है, मिल्ज आपकी हैं, किसान आपके हैं और ये मिल्ज बन्द होती हैं तो नुकसान आपका ही है। उनके साथ बैठकर उन्होंने तय किया कि मिल्ज के काम में मजदूर की भागीदारी होगी। अध्यक्ष महोदय, इतिहास उठाकर देख लिया जाए कि 1988 से पहले कभी ऐसा नहीं हुआ जब मिल्ज के काम में मजदूर को भागीदार बनाया गया हो। यह कहा गया कि मिल्ज में जितना कम ब्रेक आएगा उतना ज्यादा मजदूर को लाभ मिलेगा और मजदूरों को कैश इन्सैन्टिव मिलेगा। मजदूरों को कैश इन्सैन्टिव दिया गया और जो मिल प्रथम आई उनको नकद इनाम भी दिया गया। यह बात रिकार्ड में है कि जितनी मिल्ज उस समय घाटे में चल रही थी वे सारी की सारी मिल्ज मजदूरों के सहयोग से, प्रशासन के सहयोग से और किसानों के सहयोग से मुनाफे में आई। किसानों का भी इसमें अहम हाथ था क्योंकि उस समय गन्ना खरीदा नहीं जाता था, गन्ने के भाव कम थे। चौधरी देवीलाल जी ने पहली बार गन्ने का अच्छा भाव देकर किसानों

को खुश किया। अध्यक्ष महोदय, मेरा रिश्ता चौधरी देवालाल जी के साथ बेटे के समान था। उन्होंने जो राजनीति, जो सिद्धांत और जो करैक्टर्ज हमें दिए हैं हम सारी जिन्दगी उनको नहीं भुला सकते। एक बार दिल्ली में चुनाव थे। उसमें हमारी पार्टी का कोई उम्मीदवार नहीं था। एक भाई वहां से चुनाव लड़ रहा था, पड़ौसी होने के नाते तथा रिश्तेदारी भी थी हम वहां चले गए और उनकी मदद कर दी तो चौधरी साहब ने मुझे और मांगेराम गुप्ता जी को बुलाकर कहा कि आप चुनाव में गए थे, कोई रिश्तेदारी थी, हमने कहा हां जी तो उन्होंने कहा कोई बात नहीं। उन्होंने अपने तेजाखेड़ा फार्म से नहीं बल्कि अपने भाई के फार्म से माल्टे मंगवाए। जिनका अन्दर से लाल रंग था। उनको चीरकर हमें खिलाये यह उनकी राजनीति थी। इसके अतिरिक्त स्पीकर सर, चौधरी साहब को जब भी प्रदेश के स्तर पर या देश के स्तर पर विकास करने का मौका मिला उन्होंने पूरी लगन से किया। अभी जैसे भाई संपत सिंह जी बता रहे थे कि चौधरी देवी लाल जी ने हरियाणा टूरिज्म को अपने मुख्यमंत्री काल के दौरान निर्देश दिए थे कि हरियाणा के किसानों को, धोती बांधने वालों को, गरीब आदमी को जिसके शरीर से पसीने की बू आती है उन्हें टूरिज्म के पांच सितारा होटलों में विशेष सुविधा दी जाए और दी भी गई । ऐसा चौधरी साहब ने इसलिए किया क्योंकि उनको एहसास था कि देश की खुशहाली का रास्ता खेतों और गांवों से होकर जाता है। देश को किसानों और मजदूरों ने बचाया है। अगर वे किसानों और मजदूरों को सम्मान नहीं देंगे तो उनकी राजनीति अधूरी रह जायेगी। स्पीकर साहब, चौधरी देवी लाल जी की सोच थी कि जब तक राजनैतिक रूप से गांव के किसान को, गरीब आदमी को, छोटे को, बड़े को, दलित को या किसी भी धर्म के आदमी को मजबूत नहीं बनाया जायेगा जब तक उनका विकास नहीं होगा। चौधरी साहब चाहते थे कि गांव का किसान मारूति कार में बैठकर अपने खेतों में जाए और देखे कि फसल में पानी लग रहा है या नहीं लग रहा। चौधरी साहब के नाम से गांव में लोगों में यह बात प्रचलित थी कि चौधरी देवी लाल जी की सरकार आयेगी तो बिजली आयेगी और चौधरी देवी लाल जी की सरकार चली जायेगी तो बिजली भी चली जायेगी। इस बात को लेकर चौधरी साहब अपने अंदाज में कहते थे कि मैं हाथ में डंडा रखता हूं। मैं बिजली के तारों को मारूंगा और बिजली गांव में, किसान के खेत में, छात्रों के पास चली जायेगी। मेरे कहने का भाव यह है कि हमारे प्रदेश में आजादी के बाद जो लोग आजादी से महरूम रह गये थे उन लोगों को आजादी के सारे सुख चौधरी देवी लाल जी ने दिए। दिल्ली और चण्डीगढ़ की राजनीति को गांवों के खेत-खलियान तक पहुंचाने का कार्य चौधरी साहब ने किया। चौधरी साहब एक बार हसनगढ़ के अंदर सांपला गांव के गैस्ट हाऊस में रुके हुए थे। सारे अधिकारी भी वहीं पर थे। अगले दिन सुबह चौधरी साहब सांपला के नजदीक गढी गांव में चले गये, यह गांव छोटू राम जी का पैत्रिक गांव है और उस दिन छोटू राम जी की जयंती थी। चौधरी साहब गांव के बीच में बैठ गये और गांव वालों को कहा कि आज छोटू राम जी की जयंती है, आपकी क्या समस्या है, मुझे बताओ, मैं उसे दूर करवाउंगा। गांव वालों ने चौधरी साहब को कहा कि चौधरी साहब आप मुख्यमंत्री हैं और आप पुलिस सुरक्षा बगैर ही हमारे यहां आ गये, इस पर चौधरी साहब ने कहा कि आप मेरी चिंता छोड़ों अपना दर्द मुझे बतायें। इससे जाहिर होता है कि चौधरी साहब गरीबों और गांवों के विकास की तरफ विशेष ध्यान देते थे। ऐसी शख्सियत बार-बार पैदा नहीं होती। स्पीकर साहब मेरा चौधरी देवी लाल जी से दिली रिश्ता था। मैं तो खेत में काम करने वाला किसान था। मुझे विधान सभा तक पहुंचाने का श्रेय चौधरी साहब को ही जाता है। 1991 के विधान सभा चुनाव में चौधरी साहब ने मेरे हल्के में आकर लोगों को कहा कि धीरपाल को वोट

[श्री धीरपाल सिंह]

दो इस पर कुछ लोगों ने कहा कि हम चौधरी साहब आपको वोट दे देंगे लेकिन धीरपाल को नहीं देंगे। इस पर चौधरी साहब ने अपना बैंत उठाया और कहा कि मेरे को वोट देंगे और मेरी पार्टी के उम्मीदवार को वोट नहीं देंगे तो मैं डंडे से तुम्हारी पिटाई कर दूंगा। चौधरी साहब के इतना कहने पर ही सभी राजी हो गये कि धीरपाल को वोट देंगे। मैं यह बात इसलिए बता रहा हूं कि उनके अंदर अपनी पार्टी के लिए भी बहुत आस्था थी, चौधरी साहब ने अपने कार्यकर्ताओं को भी विधान सभा तक पहुंचाने का कार्य किया और अपने राजनीतिक दायित्व को पूरी तरह से निभाया 1988-89 की बात है। इसी हाऊस में चौधरी देवी लाल जी मुख्यमंत्री थे उस समय सोनीपत के इलाके में ओलावृष्टि हुई थी और उस समय बजट सैशन चल रहा था। चौधरी साहब बजट सैशन को छोड़कर सोनीपत में हुई तबाही का निरीक्षण करने के लिए चल पड़े और अपने साथ सोनीपत इल्के के मंत्री डा0 महासिंह व मलिक साहब को भी ले गये। उस समय चौधरी साहब पहले हवाईजहाज से दिल्ली गये और दिल्ली से कार में सोनीपत आये और सड़क के किनारे लगे एक खेत को देखने लगे। उस खेत में पूरी फसल बरबाद हो गई थी और उसका मालिक भी खेत में ही था और जाति से ब्राह्मण था। चौधरी साहब ने सुरक्षागार्ड से कहा कि इस खेत के मालिक को मेरे पास बुलाओ। सुरक्षा गार्ड ने उस ब्राह्मण से कहा कि आपको मुख्यमंत्री जी बुला रहे हैं। उस ब्राह्मण ने कहा मैं नहीं आता। चौधरी साहब ने गार्ड से पूछा कि तुमने उसे क्या कहा तो गार्ड ने बताया कि मैंने उसे कहा कि मुख्यमंत्री जी बुला रहे हैं। चौधरी साहब ने उस गार्ड से कहा कि तुम उसे जाकर यह कहो कि तुम्हें चौधरी देवी लाल जी बुला रहे हैं। गार्ड ने ऐसा ही कहा और वह आ गया। चौधरी साहब ने उस ब्राह्मण से पूछा कि तुम्हारा कितना नुक्सान हो गया इस पर ब्राह्मण ने कहा कि चौधरी साहब ये मत पूछो कि कितना नुक्सान हुआ यह पूछो कि बाकी कितना बचा है। इतनी बात सुनकर चौधरी साहब ने जितने पैसे उनकी जेब में थे वह निकाल कर दे दिये। डी0 सी0, रवैन्यू के अधिकारीगण व विधायकगण सभी वहां मौजूद थे और वहीं पर डी0 सी0 को कह दिया कि मैंने तो गिरदावरी कर दी है। जबकि आज कोई गिरदावरी होती है तो वह राजनैतिक पार्टी के आधार पर होती है। पहले यह देखा जाता है कि कौन किस पार्टी का है उसके हिसाब से ही भला करने की सोचते हैं। मेरा कहने का अभिप्राय है कि चौधरी देवी लाल जी में इतनी चिन्तन शक्ति और दर्शन था कि उन्होंने आम समाज को आर्थिकता से सम्पन्न करने की हर कोशिश की। कृषि वर्ग से होते हुए भी उन्होंने प्रदेश के स्तर पर और देश के स्तर पर ऐसी-ऐसी नीतियां लागू कीं जिससे आम आदमी को लाभ मिला। मेरी परमात्मा से एक ही कामना है कि वह अपने उस सपूत और दर्शन को अपने चरणों में स्थान दें और जो आशीर्वाद हमसे हट गया है वह आशीर्वाद सदा हमारे साथ रहे।

अध्यक्ष महोदय मुख्यमंत्री जी ने जो-जो शोक प्रस्ताव हाऊस में रखे हैं, मैं उन सभी का समर्थन करता हूं और परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि दिवंगतों के शोक-संतप्त परिवारों के सदस्यों को असामयिक निधन को सहने की शक्ति दे। यही मेरी मालिक से प्रार्थना है। ओ३म शांति ओ३म।

श्री राजेन्द्र सिंह बिसला (बल्लभगढ़) : अध्यक्ष महोदय, सदन के नेता ने जो शोक प्रस्ताव पेश किया है, मैं भी अपनी भावनाओं को इस प्रस्ताव से जोड़ना चाहता हूं। आदरणीय चौधरी देवी लाल जी के प्रति सभी राजनीतिक दलों के सम्मानित नेतागण ने श्रद्धा सुमन अर्पित किये और

उनके प्रति अपनी भावना प्रकट की है। चौधरी देवी लाल जी निश्चित रूप से आज करोड़ों देशवासियों के प्रेरणा स्त्रोत हैं। उनका स्वपन था कि हमारा देश प्रगतिशील, आत्मनिर्भर और वैभवशाली देश हो। मैं अपने आप को बहुत सौभाग्यशाली मानता हूं क्योंकि मुझे अपने विद्यार्थी जीवन में श्रद्धेय चौधरी देवी लाल जी से जुड़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जब हरियाणा अलग बनाने का आंदोलन चरम सीमा पर था उस समय में पंजाब यूनीवर्सिटी, चण्डीगढ़ का विद्यार्थी था। जब कोई नया प्रदेश बनता है तो बड़ा भारी आक्रोश होता है और लोग सैंटीमैंटल हो जाते हैं। उस समय सारे राष्ट्रीय अखबारों में एक खबर छपी थी कि पंजाब यूनीवर्सिटी, चण्डीगढ़ के कैम्पस में विद्यार्थियों में बड़ी भारी टैंशन है। चौधरी साहब चौटाला से दिल्ली की ओर गुजर रहे थे उन्होंने जैसे ही अखबार में यह खबर पढ़ी तो सीधे हमारे पंजाब यूनीवर्सिटी, चण्डीगढ़ के कैम्पस में आ गये। वे इतनी टॉवरिंग परसनैलिटी थी कि उनके आने के बाद सारे विद्यार्थी इकट्ठे हुए थे। उनकी वह स्मृति आज भी मेरे दिमाग में है। चाहे हरियाणा के विद्यार्थी थे, चाहे हिमाचल प्रदेश के विद्यार्थी थे, चाहे पंजाब के विद्यार्थी थे, हम सबको उन्होंने एक परिवार के मुखिया की तरह समझाया कि बंटवारा होगा और हरियाणा प्रान्त तो बनेगा लेकिन सारे विद्यार्थियों को प्रेम-प्यार से रहना चाहिए चाहे वह किसी भी जाति या धर्म अथवा प्रान्त के हों। अध्यक्ष महोदय, चौधरी देवी लाल जी ने सारा जीवन मूल्यों पर आधारित राजनीति की। अध्यक्ष महोदय, मैं कहना चाहूंगा कि आज बहुत बड़ा संकट देश के सामने डिकेड वैल्यू का है। सभी मंचों पर कहा जाता है कि देश ने बहुत आर्थिक सम्पन्नता की है। लेकिन मैं यह मानता हूं कि जो समाज अपने चारित्रिक और नैतिक मूल्यों को खो दे ऐसे देश को बहुत लम्बे समय तक ठोस नेतृत्व देना बड़ा कठिन है। आज बहुत गम्भीर चुनौतियां हमारे देश और समाज के सामने हैं। हमारा देश दुनिया का सबसे बड़ा प्रजातांत्रिक व राजनैतिक व्यवस्था का देश कहा जाता है। कहां से आएंगे नेता ? आखिर इसी समाज में से नेता निकलेंगे। आज बहुत बड़ा दायित्व हम सभी लोगों के कन्धों पर है। चौधरी साहब को अगर मुख्यमंत्री के रूप में या उप प्रधानमंत्री के रूप में या हरियाणा की सीमाओं में बांधा जाएगा तो उनकी जो बहुत बड़ी राजनैतिक टावरिंग पर्सनैलिटी थी, को समझने में हम सफल नहीं होंगे। चौधरी देवी लाल जी की बहुत बड़ी विचारधारा थी। आज जहां सारा देश और समाज गम्भीर चुनौतियों का सामना कर रहा है, मैं समझता हूं कि ऐसे समय में देश की अखण्डता और एकता के सामने बड़ी भारी चुनौती है। आज हम सभी का राजनीति करने का आधार ज्यादातर जातीय धर्म सम्प्रदाय रह गया है। ऐसे समय में भारतमाता के इस महान सपूत की जो पोलिटिकल सोशल फिलोसफी है, या हम यह कहें कि हरियाणा के लोग हम उनकी धरोहर हैं, तो हम को उनकी विचारधारा को प्रदेश से बाहर यानी कश्मीर से कन्याकुमारी तक उनके विचारों का प्रचार और प्रसार करना हमारा परम दायित्व है। हम किसी भी पद पर हों, जितनी हमारी क्षमता हो, उस महान विभूति की विचाराधारा का प्रचार देशहित में अवश्य करना चाहिए। चौधरी साहब बड़े कर्मठ, निष्ठावान, संघर्षशील, गांधीवादी, जननायक व बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। वे किसानों तथा शोषित वर्ग के श्रेष्ठ नेता थे। चौधरी देवी लाल जी हमेशा अन्याय, अभाव, शोषण और अज्ञानता के विरुद्ध संघर्ष करते रहे। अध्यक्ष महोदय, 1977 में जब श्रद्धेय चौधरी साहब प्रथम बार मुख्यमंत्री बने तो उस समय मैं इस सदन का जैसे आज इन्डीपेन्डेन्ट एम0 एल0 ए0 हूं उस वक्त 1977 में भी आजाद एम0 एल0 ए0 हुआ करता था। चौधरी देवी लाल जी का स्वभाव था कि जहां भी कहीं भी जाते तो रास्ते में सफर करते समय वे किसी न किसी नए एम0 एल0 ए0 को अपने साथ बैठा लिया करते थे। उनका साथ बैठाने का

[श्री राजेन्द्र सिंह बिसला]

यह उद्देश्य हुआ करता था कि ये उम्र में छोटे हैं, साथ बैठेंगे तो कुछ न कुछ सीखेंगे। ऐसा सौभाग्य मुझे कई बार उनके साथ जाने का प्राप्त हुआ। वे चण्डीगढ़ से दिल्ली जा रहे हों या वापस आ रहे हों तो अपने स्टाफ को बिना पहले बताए कहते कि कार को उल्टे हाथ की तरफ मोड़ना गांव में। फिर गांव में घुसने के बाद ड्राईवर और स्टाफ को यह कहा जाता कि गांव में सबसे पहले हरिजनों के मोहल्ले में कार को लेकर के चलो। अब ऐसा नेता देश में कहां पैदा होगा ? चौधरी साहब का उद्देश्य था और कहते थे कि तब तक शोषित-पीड़ित जो लोग हैं, उनको समानता नहीं देंगे या जब तक उनका मनोबल नहीं उठाएंगे तो तब तक हमारा यह समाज सुदृढ़ व खुशहाल नहीं होगा। गांव में जो चौपालें बनाईं उस बारे में उनका बहुत बड़ा दर्शन था, बहुत बड़ी सोच थी। चौधरी साहब कहा करते थे कि गांव में जिनके पास जमीनें हैं, बड़ा मकान है, बड़ी हवेली है या ट्रैक्टर है क्या केवल मात्र वही लोग सम्मान से अपनी चौपाल में चारपाई पर हुक्का पीने के अधिकारी हैं। चौधरी साहब मानते थे कि इस समाज और देश को मजबूत और इकट्ठा रखने के लिए सब से पहले गरीब आदमी के लिए काम करना होगा। उन्होंने हरिजन वर्ग और बैकवर्ड क्लासिज के लोगों के लिए चौपालें बनवाईं। वे कहते थे कि मैं यह चाहता हूं कि जब मैं दोबारा गांव में आऊं तो वहां का जो गरीब हरिजन है वह चारपाई पर बैठकर हुक्का पीते हुए मुझे चौपाल में नजर आए। चौधरी साहब ने जो भी अच्छे निर्णय लिए उनके बाद चाहे जो भी सरकारें रही चाहे कोई भी मुख्य मंत्री रहा उनके द्वारा लिये गये ज्यादातर निर्णय किसी ने उल्टे नहीं, यह उनका बड़प्पन है। चौधरी साहब का अपना एक आधार था। मैं पुनः उन्हें उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करूंगा तथा उनके विचारों के प्रति यह आग्रह करूंगा कि आज के हालात को देखते हुए उनकी जो पोलिटिकल विचारधारा है उसका सारे देश के अन्दर प्रचार और प्रसार करना बहुत जरूरी है। अध्यक्ष महोदय, इसके साथ ही सदन के माननीय नेता ने इस शोक प्रस्ताव में जितने भी नाम लिये हैं उन सभी दिवंगत आत्माओं को परमपिता परमेश्वर अपने चरणों में स्थान दे। जो नाम इस प्रस्ताव में शामिल नहीं हैं और बाद में ऐड किये गये हैं वे भी इसमें जोड़ लिये जाएं। धन्यवाद।

श्रीमती बीना छिब्बर (अम्बाला शहर) : अध्यक्ष महोदय, आज हमारे देश के महान नेता के निधन पर शोक प्रस्ताव इस सदन में रखा गया है। मैं भी उनके साथ अपने कुछ भाव रखना चाहूंगी। सभी वक्ताओं ने उनके राजनैतिक, उनके सामाजिक और घरेलू पक्षों को सामने रखा है लेकिन मैं समझती हूं कि हरियाणा के अन्दर महिलाओं को राजनीति में आगे लाने का सबसे बड़ा और सबसे पहला प्रयास चौधरी देवी लाल जी ने किया। मुझे सन् 1987 की घटना याद है। चौधरी देवी लाल जी लोकतन्त्र में गहरी आस्था और विश्वास रखते थे। 27 साल के बाद नगरपालिकाओं के चुनाव हुए थे। उस समय उन्होंने चुनावों के लिए एक शर्त रखी थी और यह एक नियम बनाया था कि नगरपालिकाओं के अन्दर महिलाओं का होना बहुत जरूरी है। अगर कोई महिला चुनाव जीत कर आती है तो ठीक है नहीं तो एक महिला जरूर नौमिनेट करनी पड़ेगी। अध्यक्ष महोदय, मैं समझती हूं कि आज हरियाणा की सबसे बड़ी पंचायत में मैं पहुंची हूं तो उसका सारा श्रेय चौधरी देवी लाल जी को जाता है। 1987 में मैंने नगरपालिका का चुनाव पहली बार लड़ा और वहीं से मेरा राजनैतिक जीवन भी शुरु हुआ। चौधरी देवी लाल जी ने यह बहुत बड़ा कदम उठाया था कि राजनीति में महिलाओं को आगे आना चाहिए उनकी इस बात को

आज सभी लोग कह रहे हैं। हरियाणा के अन्दर सच्चे मायनों में महिलाओं को राजनीति में प्रवेश दिलाने का काम चौधरी देवी लाल जी ने किया। अध्यक्ष महोदय, सभी लोगों ने चौधरी देवी लाल जी से जुड़े अपने-अपने संस्मरण सुनाए हैं मैं भी अपना एक संस्मरण यहां पर कहना चाहूंगी। उन दिनों की बात है जब मैं नगरपालिका में थी और वहां पर नगरपालिका में कुछ झगड़ा हो गया था और हम सभी पार्षद चौधरी देवी लाल जी के पास आए। वे मुझे कहने लगे, तू वहां थी। मैंने कहा बिल्कुल थी। तो उन्होंने कहा तूनें कुछ नहीं किया। उन्होंने मुझे कहा कि तुम्हें उनकी पिटाई करनी चाहिए थी। अगर तू पिटाई करके आती तो मुझे बहुत खुशी होती। उनका कहना था कि मैं चाहता हूं कि मेरी हरियाणा की बहनें सबल बनें और उनको किसी के सहारे की जरूरत न पड़े। अध्यक्ष महोदय, उनकी इसी भावना को प्रकट करने के लिए मैंने यह बात यहां पर रखी है। बहनें आगे बढ़ कर अपना काम करें और अपनी सही पहचान बनाएं। उनका वह वाक्य मेरे दिल के अन्दर तक छू गया। उनके उसी वाक्य को ले कर अपने आप में आत्मविश्वास के साथ मैं यहां तक पहुंच पाई हूं। एव   ार की बात मुझे याद है जब बुढ़ापा पैंशन और अपनी बेटी अपना धन योजनाएं शुरु की तो हमारी राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक लखनऊ के अन्दर हुई थी। सभी लोगों ने अपने यहां के बारे में रिपोर्टिंग दी। मैंने वहां पर रिपोर्टिंग दी कि हमारे हरियाणा के अन्दर ये योजनाएं लागू की गई हैं तो वे लोग कहने लगे कि आपका हरियाणा तो एक छोटा सा प्रदेश है लेकिन उसका जो मुख्य मंत्री है उसका राजनीतिक कद बहुत ऊंचा है। आपका हरियाणा पूरे देश को एक नई दिशा दिखाता है। अध्यक्ष महोदय, उस समय मेरा सिर भी गर्व से ऊंचा हो गया था। हमारे प्रेश की राजनीति, हमारे प्रदेश की नीतियों के बारे में और हमारे मुख्य मंत्री जी के बारे में दूसरे लोगों ने जाना। उन्होंने हमें बहुत इज्जत दी। उस समय मेरे साथ जो भी हरियाणा के लोग थे वे सभी बड़े खुश हुए। गरीबों, दलितों और कमजोर वर्गों के वे मसीहा थे। किसानों के हित के लिए अभी जाते-जाते आखिरी समय में उनके बोल थे कि जो औले पड़ गए हैं उसके लिए आप किसानों के लिए क्या कर रहे हैं ? स्पीकर सर, एक बार चौधरी साहब बीमार थे, पैरों में तकलीफ थी और वे चल नहीं सकते थे लेकीन जब संत फतेह सिंह जी ने कहा था कि अगर पंजाब न मिला तो मैं आत्महत्या कर लूंगा, आत्मदाह कर लूंगा यह बात सुन कर चौधरी देवी लाल जी उठ खडे हुए उनको डाक्टरों ने मना किया कि आपको कुछ भी हो सकता है आपकी जान भी जा सकती है लेकिन उन्होंने कहा कि मेरी जान चली जाएगी तो कोई बात नहीं अगर मैं आज वहां पर नही गया तो हरियाणा मर जाएगा । हरियाणा को बनाने वाले, हरियाणा को उन्नति के शिखर पर पहुंचाने वाले, हमारे सारे वर्गों के प्यारे और मार्गदर्शक प्रभु के चरणों में चले गये हैं । उनको हम सभी की सच्ची श्रद्धांजली यही होगी अगर हम सब उनके बताये हुए रास्तों पर चलें और अपने प्रदेश और देश को आगे बढाएं । इसके अलावा सदन में और जो भी शोक प्रस्ताव आए हैं मैं अपनी तरफ से उन सभी दिवंगतों के शोक संतप्त परिवारों के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करती हूं ।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, सदन के नेता ने जो शोक प्रस्ताव हाउस में रखा है और दिवंगत आत्माओं के प्रति विभिन्न पार्टियों के नेताओं ने जो विचार प्रकट किए हैं मैं भी अपने आपको उनकी भावनाओं के साथ जोड़ता हूं। पिछले सैशन और इस सैशन के बीच में इस संसार में से हमारे बीच में से बहुत सी महान विभूतियां खासकर के चौधरी देवी लाल जैसी महान विभूतियां इस संसार से चली गई हैं । सबसे पहले मैं परम आदरणीय चौधरी देवी लाल जी के

[श्री अध्यक्ष]

निधन पर गहरा शोक प्रकट करता हूं । न केवल आजादी के बाद बल्कि आजादी से पहले भी इस प्रदेश के ही नहीं बल्कि पूरे देश के किसानों, गरीबों और दलितों के लिए जो उन्होंने अनथक सेवाएं प्रदान की उन्हें भुलाया नहीं जा सकता । उनके दिल में किसानों, गरीबों और दलितों के लिए भरपूर प्यार और एक अलग तरीके से काम करने की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी । हरियाणा प्रदेश की स्थापना में उन्होंने जो संघर्षमय योगदान दिया, वह सर्वज्ञात है। उनका सारा जीवन प्रदेश और देश के लोगों की सेवा में ही लगा रहा और उन्होंने कभी भी सत्ता के लोभ में आकर जन भावनाओं को नजरअंदाज नहीं किया । वे देहात की मिट्टी से जुड़े हुए महान् राजनीतिज्ञ थे जो समाजसेवा को सबसे बड़ा मानते थे । उनकी ईमानदारी, सादगी और मानवता के उच्च आदर्श और सिद्धांतों की महत्वपूर्णता हमेशा याद रखी जाएगी । जब भी वे सत्ता में किसी भी पद पर रहे, उन्होंने जनकल्याण की अनेक योजनाओं को पहली बार शुरू करा कर जनसेवा के इतिहास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया । जिनमें से कुछ महत्वपूर्ण योजनाएं वृद्धावस्था पैंशन, विकास कार्यों के लिए मैचिंग ग्रांट, कर्जा माफी, खुला दरबार और ग्राम विकास के लिए अनेक योजनाएं महत्वपूर्ण हैं।

आजकल के भौतिक युग में शायद ही कोई मिसाल होगी कि अपने सिर से ताज उठाकर कोई आदमी दूसरे के सिर के ऊपर रख दे । ऐसा केवल चौधरी देवी लाल जी ही कर सकते थे जिन्होंने 1989 में नेशनल फ्रंट का संसदीय दल का नेता चुने जाने के बाद भी श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह को प्रधानमंत्री बनाया जिसके लिए वे किंग-मेकर के नाम से मशहूर हो गए थे ।

चौधरी देवी लाल जी में इतने गुण थे कि उनकी पूर्ण रूप से व्याख्या करने लगें तो बहुत समय लग जाएगा । आप सब लोगों का ज्यादा समय न लेते हुए मैं उनके बारे में अंत में केवल इतना ही कहना चाहूंगा कि हमारे देश को आज के दिन चौधरी देवी लाल जी जैसे महान राजनीतिज्ञ, समाजसेवी, कुशल प्रशासक और अच्छे खिलाड़ी की अत्यंत आवश्यकता है । उनके प्रति हमारी सबसे बड़ी श्रध्दांजलि यही होगी कि हम उनके दिखाये हुए रास्ते पर चलें और उनके आदर्शों और सिद्धांतों का पुरी तरह से पालन करें ? मैं आप सब को एक बात और बताना चाहूंगा कि जब 1990 में विश्वनाथ प्रताप सिंह जी प्रधानमंत्री थे तब गेहूं के भाव बढ़ाने का मामला कैबिनेट में आया था। किसान यूनियन की मांग थी कि गेहूं का दाम 180 रुपए क्विंटल से बढ़ाकर 225 रुपए क्विंटल होना चाहिए। विश्वनाथ प्रताप सिंह जी के सामने किसी वजीर की बोलने की हिम्मत नहीं पड़ती थी। चौधरी देवी लाल जी ने हमें बताया था कि दूसरे वजीर श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के मुंह की तरफ देखते थे जैसा कि आप मेरे मुंह की तरफ देखते हैं कि कहीं नाराज नहीं हो जाएं। चौधरी देवी लाल जी ने उस प्रस्ताव को रखा था और कहा था कि गेहूं का भाव 225 रुपये प्रति क्विंटल का होना चाहिए। सात दिन के डैड लॉक के बाद किसानों को 215 रुपये का भाव मिला था। एक बार खाद के भाव बढ़े थे और उस समय चाहे कोई भी सरकार थी उस समय मैं इफ्को का चेयरमैन था और मुझे इस्तीफा देने का आदेश हुआ था, हमने तुरन्त इस्तीफा दिया था। हमारे हाथ में कुछ नहीं था लेकिन वे चाहते थे कि एक प्रेरणा बने और लोगों को यह लगे कि हम उनके लिए काम करते हैं। चौधरी देवी लाल जी ने अपने जीवन में कभी एम0 एल0 ए0 के पद से इस्तीफा दिया, कभी पार्टी के लोगों से इस्तीफा दिलवाया और वे हमेशा इस बात में लगे रहते थे कि किसी के साथ भी अन्याय न हो। हरियाणा के साथ जो अन्याय हुआ

था उसके विरुद्ध संघर्ष करने में एक जुट होकर सभी विपक्षी दलों को साथ लेकर चलने में उनका मुकाबला कोई भी इस सदी में नहीं कर पाया। चौधरी साहब ऐसे सादे थे कि वह खाने पीने की भी परवाह नहीं करते थे। हम तो उनके साथ रहते थे इसलिए हमें पता है चाहे खाना कैसा भी आ गया, चाहे मोटी रोटी हो या कच्ची रोटी हो, उन्होंने उसके लिए कभी भी ना नहीं की। चौधरी साहब इतनी उम्र में भी सब लोगों का जो उनके घर जाते थे, चाय का या खाने का इतना ध्यान रखते थे जितना आप और हम लोग भी नहीं रख पाते हैं। उनके मन में सब लोगों के प्रति बड़ी तड़प थी। चौधरी साहब एक युग पुरुष थे। ऐसे महान नेताओं की, जिन्होंने इस देश की आजादी के लिए काम किया हो, इस देश की सफलता के लिए काम किया हो और प्रशासनिक सुधारों के लिए काम किया हो, ऐसे महान नेताओं के बारे में कोई न कोई किताब जरूर होनी चाहिए। जिस तरह से हिस्ट्री के पेपर में पुराने राजाओं के बारे में सवाल होते हैं उसी तरह से चौधरी साहब की नीतियों के बारे में भी हरियाणा में और देश के दूसरे भागों में 25 नम्बर या 15 नम्बर के सवाल आने चाहिए ताकि लोग उनकी नीतियों को याद रख सकें और उनकी नीतियों से कुछ सीख सकें। इतिहास भी यही कहता है कि अकबर बिल्कुल अनपढ़ बादशाह था लेकिन उसने जो समाज सुधार के काम किए उनकी वजह से ही आज भी उसको याद किया जाता है। इसी तरह से शेर शाह सूरी ने उस जमाने में केवल चार साल में ही जी0 टी0 रोड बनवायी जिसकी कल्पना करना भी मुश्किल है और इसी वजह से उसको आज तक याद किया जाता है अगर आज के दिन कलकत्ता से पेशावर तक रोड बनवायी जाए तब भी यह नहीं बन सकती। इसी तरह से अलाऊद्दीन खिलजी ने जो सुधार कार्य किए उनकी वजह से उसको भी याद किया जाता है। इसी प्रकार से हरियाणा में भी चौधरी साहब ने बहुत काम किए। इसी तरह का उनके द्वारा किया गया एक काम कर्जा माफी का था। हरियाणा सरकार ने उस समय 248 करोड़ रुपये का कर्जा माफ किया था। जब वे केन्द्र में गये तो उन्होंने दस-दस हजार रुपये के कर्ज माफी की नीति लागू करवायी हालांकि उनको इसका बहुत नुक्सान भी उठाना पड़ा। जब वे उस समय विश्वनाथ प्रताप सिंह से किसानों के हितों की जैसे भाव बढ़ाने की, कर्जा माफ करने की या गेहूं के बोनस की बात बार-बार करते थे तो उनको रात के 11 बजे मंत्रिमंडल से निष्कासित कर दिया गया। लेकिन उन्होंने उस निष्कासन की कोई परवाह नहीं की और आगे बढ़ते रहे तथा उन्होंने वही सारे काम सारे देश में करके दिखाए। चौधरी साहब जैसे महान नेता एवं सपूत द्वारा की गयी सेवाओं से लाभ उठाने के लिए और उनको यादगार बनाने के लिए सामाजिक संस्थाओं को आगे आना चाहिए। इसके अलावा मैं हरियाणा सरकार को भी एक सलाह देना चाहता हूं कि चौधरी साहब के नाम पर किसी यूनिवर्सिटी का नाम, किसी ऐग्रीकल्चरल कालेज का नाम, किसी डैंटल कालेज का नाम या किसी मेडीकल कालेज का नाम यानी कोई न कोई संस्था का नाम उनके नाम पर जरूर होना चाहिए ताकि लोग उनको याद रखें और जान सकें कि हमारे देश में चौधरी साहब जैसे महान नेता भी हुए हैं। जो समाज अपने पुरुखों को या अपने नेताओं को याद नहीं करता वह समाज कभी भी तरक्की नहीं कर सकता, आगे नहीं बढ़ सकता। सदन के अन्य साथियों ने भी उनके बारे में कई बहुमूल्य सुझाव दिए हैं।

इसके अलावा श्री जगन्नाथ कौशल जी के निधन पर भी मुझे गहरा दुःख है वे सात साल तक हरियाणा के एडवोकेट जनरल रहे और इसके अलावा राज्यसभा तथा लोकसभा के सदस्य रहने के साथ-साथ तकरीबन दो वर्षों तक केन्द्र में लॉ मिनिस्टर रहे। उन्होंने बिहार के राज्यपाल के रूप मे तीन वर्षों तक देश की सेवा की।

[श्री अध्यक्ष]

इसके अलावा सरदार सुरजन सिंह, सरदार सरूप सिंह, सरदार रतन सिंह, श्री बख्तावर सिंह तथा हरियाणा के शहीदों जिनके नाम सदन के नेता ने शोक प्रस्ताव में लिए हैं उन सबके निधन पर भी मुझे गहरा दुःख है। इसी तरह से हरियाणा के वित्त मंत्री जी के भांजे श्री सतपाल सिंह, हरियाणा विधान सभा के सदस्य श्री बलवंत सिंह मायना की माता जी श्रीमती भाड़ी देवी और हरियाणा विधान सभा के सदस्य श्री जे0 पी0 शर्मा की बहन श्रीमती कौशल्या देवी एवं विधान सभा के ही सदस्य श्री सूरजमल जी की पत्नी श्रीमती जयवंती देवी, हरियाणा विधान के सदस्य श्री कवरपाल जी के पिता श्री चंदन सिंह तथा हरियाणा विधान सभा के सदस्य श्री पूर्ण सिंह डाबड़ा की चाची जी श्रीमती विद्या देवी के निधन पर मुझे गहरा दुःख है। इसी तरह से मेरी माता श्रीमती फूलवती देवी जी के निधन पर भी मुझे दुःख हुआ है। इसके अतिरिक्त भी जो अन्य नाम बताये गये हैं, उनके निधन पर भी मैं गहरा शोक प्रकट करता हूं।

परमपिता परमात्मा इन सभी दिवंगत आत्माओं को अपने चरणों में स्थान दें और उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे। इन सभी शोक संतप्त परिवारों तक इस सदन की संवेदना पहुंचा दी जायेगी।

अब मैं दिवंगत आत्माओं के सम्मान में उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए दो मिनट का मौन धारण करने के लिए सदन के सभी सदस्यों को खड़ा होने के लिए अनुरोध करता हूं।

(इस समय दिवंगत व्यक्तियों के सम्मान में सदन के सदस्यों ने खड़े होकर दो मिनट का मौन धारण किया।)

बैठक का स्थगन

श्री अध्यक्ष : ऑनरेबल मैम्बर्ज, देश के भूतपूर्व उप प्रधानमंत्री एवं भूतपूर्व मुख्य मंत्री, हरियाणा, आदरणीय चौधरी देवी लाल जी हमारे बीच में नहीं रहे हैं। सभी सदस्यों की भावनाओं को देखते हुए यदि हाऊस की सहमति हो तो आज हाऊस को ऐडजर्न कर दिया जाए।

आवाजें : ठीक है जी।

श्री अध्यक्ष : आज की लिस्ट के जो बकाया आइटम्ज़ हैं जैसे प्रेजैन्टेशन एंड ऐडौप्शन ऑफ फर्स्ट रिपोर्ट ऑफ बिजनेस ऐडवाइजरी कमेटी एंड पेपर्स टू बी लेड एंड री-लेड ऐटसैट्रा को दिनांक 12-6-2001 को टेकअप किया जाएगा।

ऑनरेबल मैम्बर्ज़, अब यह सदन मंगलवार 12 जून, 2001 प्रातः 9.30 बजे तक ऐडजर्न किया जाता है।

*12.56 (*तत्पश्चात् सदन मंगलवार, 12 जून, 2001 प्रातः 9.30 बजे तक स्थगित हुआ।

33379—H.V.S.—H.G.P., Chd.